॥ श्रीः ॥

षोडश

चाणक्यनीती प्रक[illegible]

भाषाटीका दोहासहीत

यहपुस्तक

लोकहितार्थं

पंडित श्रीधर शिवलालजीके

ज्ञानसागर छापखानेके

मालिकनें

मुंबईमें

अपने "ज्ञानसागर" छापखानेमें छापकर

प्रसिद्धकिया.

संवत् १९५२ सन १८९५ वैशाख वदी १०

T

॥ श्रीः ॥

षोडश

चाणक्यनिती प्रकाश

भाषाटीका दोहासहीत

यहपुस्तक

लोकहितार्थं

पंडित श्रीधर शिवलालजींके

ज्ञानसागर छापखानेके

मालिकनें

मुंबईमें

अपने "ज्ञानसागर" छापखानेमें छापकर

प्रसिद्धकिया.

संवत् १९५२ सन १८९५ वैशाख बदी १०

T

T

सूचना.

—:०:—

हमारे ज्ञानसागर छापखानेमें छपेहुए अनेक तरहके ग्रंथ वैदिक, वेदांत, पुराण, धर्मशास्त्र, कर्मकांड, व्याकरण, न्याय, छंदोपनिषद, काव्य, अलंकार, नाटक, चंपू, कोश, वैद्यक, अरु प्रकीर्णग्रंथ, स्तोत्रादि, ख्याल, किस्सा, वगैरे अनेक तरहके भाषा अरु संस्कृतमें छापकर तैयार हैं. जिन महाशयोंकों चाहिये सो दाम भेजकर मंगालेवैं. पूर्व दामोंकी निश्चैकरणी होय तो सबपुस्तकोंका सूचीपत्र आधा आनेका टिकटभेजकर मंगालेवैं.

पुस्तक मिलनेका ठिकानाः—

पंडित श्रीधर शिवलालजीके

ज्ञानसागर छापखाना

(मुंबई.)



T

T

॥ श्रीः ॥

चाणक्यनीतिप्रकाशः

श्रीगणेशाय नमः

॥ दोहा ॥

सुमतिबढावनसरवजन, पावननीतिप्रकाश ।
भाषालघुचानकभलैं, भनतभावनादास ॥ १ ॥

प्रणम्यशंकरंदेवं ब्रह्माणंचजगद्गुरुं ॥ विष्णुं
प्रणम्यशिरसा वक्ष्येहंशास्त्रमुत्तमम् ॥ १ ॥

दोहा—संकरदेवप्रणामकरि, विधिपदवंदनठांनि ।
विष्णुचरनजुगसीसधरि, कहुंसुचिशास्त्रबषांनि ।

टीका—शंकर देवकों अरु जगतके गुरु ब्रह्माकों प्रणाम करके फिर विष्णुकों मस्तकसें नमस्कार करकें उत्तम शास्त्र चाणक्य ग्रंथकों मैं बरण न करूंगा ॥ १ ॥

चाणक्येनस्वयंप्रोक्तो नीतिशास्त्रसमुच्चयः॥
तमहंसंप्रवक्ष्यामिनराणांबुद्धिबर्धनं ॥ २ ॥

दोहा—कह्यौप्रथमचाणकमुनि, शास्त्रसुनीतिसमाज ।
सोइअबमैंबरनूंनरन, बुद्धिवढावनकाज ॥ २ ॥

टीका—इसही नीतिशास्त्र समुच्चय ग्रंथको प्रथम चाणक्य मुनीने कहा है सोइ अब मैं मनुष्योंकी बुद्धि वढानेकेलिये बरणन करताहुं ॥ २ ॥

अतोर्थंपठ्यतेशास्त्रंकीर्तिर्लोकेषुजायते॥की
र्तिमान्पूज्यतेलोकैःपरत्रेहचमानवः ॥ ३ ॥

दोहा–एहितैंपढैजुशास्त्रकूं, कीरतिसबहिकरंत ।
पूजियकीरतिबंतनर, इहपरलोकअनंत ॥ ३ ॥

टीका–इसवास्ते इस शास्त्रको पढना शास्त्र पढनेसें लोकोंमे कीर्ति होती है उस कीर्तिवंत पुरुषकी इहलोक परलोकमै बहुतसी पूजा प्रसंसां होती है ॥ ३ ॥

वलीपलितकायोपिकुर्याद्वैश्रुतसंग्रहं॥ नत
त्रधनिनोयांतियत्रयांतिबहुश्रुताः ॥ ४ ॥

दोहा–बलीपलिततनवृद्धतोंउ, श्रुतसंग्रहकरिलेहु ।
जहांजातबहुश्रुततहां, धनवंतनसुपनेहु ॥ ४ ॥

टीका–वलीपलितकाय अर्थात् वृद्ध होजाय तथापि शास्त्रका संग्रह करना क्योंकि जिस जगे बहुश्रुत विद्यावान् जातेहैं उस जगे धनवान् नहिं जाते हैं ॥ ४ ॥

श्रुत्वाधर्म्मं विजानाति श्रुत्वात्यजतिदुर्मतिं
श्रुत्वाज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वामोक्षंचगच्छति॥५॥

दोहा–शास्त्रसुनेजानतधरम, जियकीदुर्मतिजाय ।
होतश्रवनतैंग्यांनहिय, श्रवनमुक्तिपदपाय ॥५॥

टीका–शास्त्रको श्रवण करके धर्मकों जानता है और शास्त्रके सुननेसे दुर्मति जो खोटी बुद्धि तिसको त्यागता है और शास्त्रके सुनकरके ज्ञानकों प्राप्तहोताहै और शास्त्रके सुननेसें मोक्षको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

T

श्रुतंयन्नविरागायनधर्मायनशांतये ॥ किंते
नपठितेनापि काकभाषितमेवच ॥ ६ ॥

दोहा–शास्त्रहुतैंनविरागजेहि, धर्मनसांति लहैन ।
कहालाभतेहिपढनतै, जिमवायसकेबैन ॥ ६ ॥

टीका–जो शास्त्रके सुननेसें अथवा पढनेसें वैराग्य न होय अथवा धर्मकी प्राप्ति न होय अथवा चित्तकी शांति न होय तो तिस शास्त्रके पडनेसें क्या प्रयोजन वो शास्त्रका पढना तो केवल काकके वचनतुल्य हैं ॥ ६ ॥

खंडेखंडेतुपांडित्यंक्रयक्रीतंचमैथुनं॥भोजनं
चपराधीनं तिस्रः पुंसांविडंवनाः ॥ ७ ॥

दोहा–खंड खंड पंडितपनौ, भोजनपरआधीन ।
धनदेकैतियरतिकरै, जगविडंबनातीन ॥ ७ ॥

टीका–थोडा थोडा सब शास्त्रोकों पढके पंडितपणो प्रसिद्ध करना और द्रव्य देके मैथुन और पराधीनतासें भोजन यह तीनों वार्ता पुरुषोंके विडंवना कारक है ॥ ७ ॥

पदंपदार्द्धपादंवा आहरेद्यःसुभाषितं ॥ मू
र्खोपिप्राज्ञतांयातिनदीभिःसागरोयथा ॥ ८ ॥

दोहा–पदरुपदारधपादइक, सीषतसदासुजान ।
मूढहुपंडितहोतजिमसरितैंसागरजांन ॥ ८ ॥

टीका–जो कोई शास्त्रका पद अथवा आधापद नित्यप्रति सीखे तो मूर्खभि पंडित होजाय जैसें नदीयोंसे समुद्र भरि जाय तैसे ॥ ८ ॥

नदीतीरेषुयोवृक्षोयाचनारीनिरंकुशा ॥मंत्र

T

हीनोभवेद्राजातच्चसर्वंविनश्यति ॥ ९ ॥

दोहा—तरवरसरितातीरपर, निपटनिरंकुशनारि ।
नरपतिहीनसलाहनित, विनसतलगैनवारि॥९॥

टीका—नदीकी तीरपर जो वृक्ष और निरंकुश (स्वेच्छा-चारिणी) स्त्री और मंत्रहीन राजा जिनको कोई सलाह देने-वाला नही हो,यह तीनो तत्काल नाश हो जाते हैं ॥ ९ ॥

सेवितव्योमहावृक्षच्छायायस्यास्तिशीतला॥
यदिदैवात्फलंनास्तिछायाकेननिवार्यते॥१०॥

दोहा—सदाविटपबडसेइयै,घनशीतलजेहिछांहि ।
जोनमिलैफलतिनहुतैं, छांहिनिवारियैनांहि १०

टीका—बडा वृक्ष सदा सेवन करना जिसकी छाया शी-तल होती है जो कदापि दैवयोगसे फलकी प्राप्ति न होय तोभि छायाकों किसने निषेध करी अर्थात् मोटे वृक्षका से-वन करनेसें शीतल छाया अवश्य होती है ॥ १० ॥

गुरुश्छायापिताछायाछायास्याज्ज्येष्ठबान्धवः॥
छायाराज्ञश्चसन्मानमेताश्छायाःसुदुर्लभा ॥११॥

दोहा—गुरुछायाछायापिता, भलछायाबडभ्रात ।
छायानृपतैंमांनयह, दुर्लभछांहिकहात ॥ ११ ॥

टीका—छाया ४ प्रकारकी गुरु छाया. पिता छाया और ज्येष्ठ भ्रातारूप छाया अरु राजाके सन्मानरूप छाया यह ४ छाया अतिदुर्लभ है ॥ ११ ॥

इतिश्रीलघुचाणक्येराजनीतिशास्त्रेप्रथमोऽध्यायः १

T

अतिदानाद्बलिर्बद्धोनष्टोमानात्सुयोधनः ॥
विनष्टोरावणोलौल्यादतिसर्वत्रवर्ज्जयेत् ॥ १ ॥

दोहा—बलिबिगरचौअतिदांनतैं, मरचौसुयोधनमाँन ।
रावनहत्यौअतिलोलता, अतिसबवर्जितजांन १

टीका—अतिदानदेनेसे बलिराजा बंधगया और अतिमान राखनेसे दुर्योधन नष्ट भया और इंद्रियनकी अति चपलतासे रावण नष्ट भया इसवास्ते अति सर्वत्र वर्जना ॥ १ ॥

आत्मनोमुखदोषेणबध्यंतेशुकसारिकाः ॥
बकास्तत्रनबध्यंतेमौनंसर्वार्थसाधनं ॥ २ ॥

दोहा—बँधतनिजमुखदोषतैं, शुकसारिकासुजांन ।
बककबहूंनहिबांधियै, मौनसरबसुषषांन ॥ २ ॥

टीका—आपके मुखके दोषसे अर्थात् अच्छे बोलनेसें शुक अरु सारिका बंधनमें आतेहैं परंतु (बक) बगुले नहिबंधते हैं क्योंकि मौन रखना वो सब अर्थका साधन है ॥ २ ॥

क्षमाखड्गंकरेयस्यदुर्ज्जनःकिंकरिष्यति ॥ अ
तृणेपतितोवन्हिःस्वयमेवोपशाम्यति॥ ३ ॥

दोहा—क्षमाषडगजेहिकरधरचौ, अरितोहिकहाकराय ।
त्रिनविहीन भू आगपरि, आपहुतैंबुझिजाय ।६।

टीका—क्षमारूप खड्ग जिसके हाथमें है उसका दुर्जन जे शत्रु क्या करसके जैसे तृणरहित पृथ्वीपर पडाहुवा अग्नि स्वयंही शीतल होजाता है ॥ ३ ॥

धर्म्मस्यमूलंराजानोराज्ञांमूलंतुपंडिताः ॥
पंडितायत्रपूज्यंतेतत्रधर्मःसनातनः ॥ ४ ॥

दोहा–धरममूलभूपतिधरा, पंडितताहिकहाय ।
पंडितजनजहँपूजियै, निततहँधर्मरहाय ॥ ४ ॥

टीका–धर्मका मूल राजा अरु राजाका मूल पंडित ऐसे पंडितलोगनकी जहां पूजा होय उसीजगे सदा निरंतर धर्म रहता है ॥ ४ ॥

राज्ञिधर्म्मिणिधर्मिष्ठापापेपापासमेसमाः ॥
प्रजास्तमनुवर्त्ततेयथाराजातथाप्रजाः ॥ ५ ॥

दोहा–नृपधरमीधरमीप्रजा, पापपापमतिजान ।
समतैंसमभूपतिजथा, परगटप्रजापिछांन ॥ ५ ॥

टीका–राजा धर्मि होय तब प्रजाभि धर्ममे चले और राजा पापायुक्त होय तब प्रजाकी बुद्धिभि पापमई होजाती है प्रजा तो केवल राजाके अनुसार चले जैसे राजा तैसी प्रजा ॥ ५ ॥

बुद्धिबोध्यानिशास्त्राणिनशास्त्रंबुद्धिबोधकं ॥
प्रत्यक्षेपिकृतेदीपेचक्षुर्हीनोनपश्यति ॥ ६ ॥

दोहा–बुद्धितैंशास्त्रसुबोधकै, बुद्धिशास्त्रतैंनांहि ।
देषतप्रगट न दीपजिम, नैंनहीनघरमांहि ॥ ६ ॥

टीका–बुद्धिबोध्य अर्थात् बुद्धिसें जाणने योग्य शास्त्र है परंतु शास्त्र बुद्धिका बोधक नही जैसें प्रत्यक्ष दीपक होतेभि चक्षुहीन अंधापुरुष देखेनही ॥ ६ ॥

पठकःपाठकश्चैवयेचान्येशास्त्रचिंतकाः ॥
सर्व्वेव्यसनिनोमूर्खायःक्रियावान्सपंडितः ॥ ७ ॥

दोहा–पढनपढांवनहारअरु, चिंतकबेदपुरांन ।
सठतेतेविसनीसबै, पंडितकिरियावांन ॥ ७ ॥

टीका—विद्या पढनेवाला पढानेवाला अरु औरभि शास्त्रके विचार करनेवाला इन सबनको यह विद्या पढनेका व्यसन है, विद्या पढके क्रिया अनुष्ठान करे वो पंडित. और सब मूर्ख हैं ॥ ७ ॥

परोपदेशेकुशलादृश्यंतेबहवोनराः ॥ स्वयंधर्मंप्रकुर्वाणाःसहस्रेष्वपिदुर्लभाः ॥ ८ ॥

दोहा—औरनकूंउपदेसअति, करिवैकुसलअनेक ।
आपधरमआचरहिनर, सौसहस्रमैएक ॥ ८ ॥

टीका—परकों उपदेश देनेमें कुशल, ऐसे तो बहुतसे मनुष्य जगत्में दीखते हैं; परंतु आप धरम करनेवाले तो सहस्रनमें एक होनाभि दुर्लभ है ॥ ८ ॥

हतंज्ञानंक्रियाहीनंहताअज्ञानिनःक्रियाः ॥
हतंनिर्नायकंसैन्यमभर्त्तारःस्त्रियोहताः ॥ ९ ॥

दोहा—हीनक्रियासोज्ञ्यानहत, हतीक्रियाअविचारि ।
हतसेनानायकरहित, नाँथविनांहतनारि ॥ ९ ॥

टीका—क्रियाहीन ज्ञान हतहै. अरु ज्ञानविगर क्रिया हतहै और (निर्नायक) धणीविगर सेना हतहै और भर्तार विगर स्त्रियां हतहैं ॥ ९ ॥

केचिदज्ञानतोनष्टाःकेचिन्नष्टाःप्रमादतः ॥ केचिद्ज्ञानविलोपेनकेचिन्नष्टैस्तुनाशिताः ॥ १० ॥

दोहा—हतेकितेअग्यानतैं, कितेप्रमादविनास ।
कितेग्यानमदतैंहते, नसेहुतैं केउनास ॥ १० ॥

T

टीका–कितनेक अज्ञानतें नाशभये, और कितनेक प्रमादतें नाशभये, और कितनेक ज्ञानमदसें नाशभये, और कितनेक नष्टकरकें नाशभयेहैं ॥ १० ॥

अप्रियवचनदरिद्रैःप्रियवचनाढ्यैस्वदारपरितुष्टैः परपरिवादनिवृत्तैःक्वचित्क्वचिन्मंडितावसुधा ॥ ११ ॥

दोहा–अप्रियवचनदरिद्रजेहि, प्रियबांनीधनएक ।
निजतियरतानिंदारहित,भूभूषणकितनेक॥ ११॥

टीका–कठोर वचनकरकें रहित, और प्रिय वचन बोलनेवाले, और स्वकीय स्त्रीसें संतोष रखनेवाले और परानिंदासें निवृत्त भये ऐसे कितनेक मनुष्यकरकें पृथ्वी शोभित है ॥ ११ ॥

इतिश्रीलघुचाणक्येराजनीतिशास्त्रेद्वितीयोऽध्याय

अन्यथावेदशास्त्राणिज्ञानपांडित्यमन्यथा ॥
अन्यथातत्पदंशान्तंलोकाःक्लिश्यंतिचान्यथा ॥

दोहा–वेदशास्त्रऔरहिवदै, पंडितजांनहिऔर ।
पेषियैऔरहिसांतपद, जगकहुँऔरहिदौर ॥ १ ॥

टीका–वेद शास्त्र तो और रीतिसें बोलतेहैं, अरु पंडित लोक और रीतिसें जानतेहैं, अरु शांतस्वरूप मोक्षपद औरहि तरहके हैं अरु लोक जगतमें औरहि रीतिसें क्लेश करते हैं ॥ १ ॥

अग्निहोत्रफलावेदाःशीलव्रतफलंश्रुतं॥रतिपुत्रफलादारा दानभुक्तिफलंधनं ॥२॥

दोहा—अग्निहोत्रफलवेदको, सीलश्रवनफलजान
तियफल सुत रतिसुष सदा, धनफलभोगरुदाँन

टीका—वेदका फल अग्निहोत्र करना, शास्त्र पढने सुणानेका फल शील व्रत धारणा करना, और स्त्री परणी जिसका फल मैथुन अरु पुत्र होना, ऐसें धनका फल दान देना अरु भोग भोगना ॥ २ ॥

नभावेनविनादानंनभावेनविनाक्रिया॥नभा
वेनविनासिद्धिस्तस्मात्भावोहिकारणम्॥३॥

दोहा—विनाभावदाननवनै, क्रियाभावविननांहि ।
भावविनांनहिंसिद्धिभल, कारनभावकहांहि॥३॥

टीका—भाव विगर दान नहि, भाव विगर क्रिया नहि, भाव विगर कोइभि कार्यकी सिद्धि नाहि, इसवास्ते सबका कारण भावही है ॥ ३ ॥

अग्निहोत्रेष्ठविप्राणांहृदिदेवोमनीषिणां ॥
प्रतिमास्वल्पबुद्धीनांसर्वत्रविदितात्मनां॥४॥

दोहा—अग्निहोत्रहरिद्विजनक, विदुषनकैहियमांहि ।
मूरतिमैंमतिमंदतेहि, ग्योनिनकेसबठांहि ॥४॥

टीका—विप्रनके अग्निहोत्रमें देव है और बुद्धिवानोंके हृदयमें देव है और अल्पबुद्धियोंके प्रतिमामें देव है और ज्ञानीजनोंके सब जगत् देव है ॥ ४ ॥

धातुपाषाणदारूणांकृत्वामूर्त्तिंनिवेशयेत् ॥
तस्यांचभक्तिभावंचतस्यविष्णुःप्रसीदति ॥५॥

दोहा—धातु पाषानरुकाठही, करिमूरतिपधराय ।
भक्तिभावतामैंधरत, हरिप्रसन्नव्हैजाय ॥ ५ ॥

टीका—धातु, पाषाण, काष्ठकी मूर्त्ति स्थापन करके तिन मूर्त्तिमें जो कोइ भक्तिभाव करे तिसपर विष्णु प्रसन्न होते हैं ॥ ५ ॥

नदेवोविद्यतेकाष्ठेनपाषाणेनमृन्मये ॥ भावो हिविद्यतेदेवस्तस्माद्भावोहिकारणम् ॥ ६ ॥

दोहा—देवनकाठपषांनमृत, मूरतिमैनरहाय ।
भावतहांहिदेवभल, कारनभावकहाय ॥ ६ ॥

टीका—देव काष्टमें नहि देव पाषाणमें नहि. देव मृत्तिकामें नहिं. भावहै वोहि देव है तिस्सै भावहि सबनका कारण है ॥ ६ ॥

क्षांतेःपरंतपोनास्तिनसंतोषात्परंसुखं ॥ नच तृष्णापरोव्याधिर्नचधर्मोदयापरः ॥ ७ ॥

दोहा—नहिसंतोषसमांनसुख,तपनक्षमासमआन ॥
तृसनासमनहिव्याधितन, धरमनदयासमान ७

टीका—क्षमा समान तप नहिं. और संतोष समान सुख नहि. और तृष्णाा समान व्याधि नहि अरु दया समान धर्म नहि ॥ ७ ॥

क्रोधोवैवस्वतोराजातृष्णावैतरणीनदी॥विद्याकामदुघाधेनुःसंतोषोनंदनंवनम् ॥ ८ ॥

दोहा—त्रिसनावैतरणीनदी, धरमराजसमरोष ।
कामधेनुविद्याकहिय, नंदनवनसंतोष ॥ ८ ॥

T

टीका क्रोध सोतो यमराज है अरु तृष्णा वैतरणी नदी है और विद्या है सो कामधेनु है. अरु संतोष नंदनवन है ८

कोतिभारःसमर्थानांकिंदूरंव्यवसायिनां ॥
कोविदेशःसुविद्यानांकःपरःप्रियवादिनां॥९॥

दोहा—निसचयमतितेहिदूरकहा, समरथकहाअतिभार
विद्यातिनहिविदेसकहा,कोपरबोलहिप्यार॥९॥

टीका—समर्थ पुरुषकी अति भारक्त्वा, निश्चयात्मक बुद्धिवानको दूर क्या ! और सद्विद्यावानको विदेशकौंन अरु प्रिय वचन बोलनेवालेको पर कौन ॥ ९ ॥

गुणंपृच्छतुमारूपंशीलंपृच्छतुमाकुलं॥सिद्धिं
पृच्छतुमाविद्यांभोगंपृच्छतुमाधनम् ॥ १०॥

दोहा—गुनपूछहुकहारूपकौं, कुलकहासीलहिपेष ।
सिद्धिपूछहुविद्याकहा, धनकहाभोगहिदेष १०

टीका—किसीकागुन देखना रूपका क्या और शील देखना कुलका क्या और कार्यकी सिद्धिको पूछना विद्या नहिंपुछना और धनको खावे खरचे भोगवै वो देखना परंतु धनको नहिं पुछना ॥ १० ॥

गुणोभूषयतेरूपंशीलंभूषयतेकुलं ॥ सिद्धि
र्भुषयतेविद्यां भोगोभूषयतेधनम् ॥ ११ ॥

दोहा—गुनभूषनहैरूपकौ, कुलकौशीलकहाय ।
विद्याभूषणसिद्धिबन, धनतेहिषरचतषाय ।११

टीका—रूपका भूषण गुण. और कुलका भुषण शील और विद्याका भूषण सिद्धि और धनका भूषण भोग ॥ ११॥

T

अगुणस्यहतंरूपंअशीलस्यहतंकुलं॥ असि
द्धस्यहताविद्याअभोगस्यहतंधनं ॥ १२ ॥

दोहा—गुंनविनजनकोंरूपहत, कुलहतसीलविहिन।
विद्याहतबिनासिद्धितैं, धनहतभोगनकीन १२

टीका गुणरहित पुरुषका रूप हतहै. अर्थात् निरर्थक है और शील विगर कुल निरर्थक है और सिद्ध विगर विद्या निरर्थक है. और भोगविगर धन निरर्थक है ॥ १२ ॥

इतिश्रीलघुचाणक्येराजनीतिशास्त्रेतृतीयोऽध्यायः

शुचिर्भूमिगतंतोयं शुचिर्नारीपतिव्रता ॥
शुचिःक्षेमकरोराजासंतोषिब्राह्मणःशुचि ॥१॥

दोहा—नितशुचिपानीभूमिगत, तियशुचिपतिआधीन।
प्रजासहायकभूपशुचि,शुचिद्विजतृसनाहीन १

टीका—भूमिपर पडाहुवा पानी पवित्र. और पतिव्रता स्त्री पवित्र. और प्रजाकी पालना करै वो राजा पवित्र. और संतोष राखे वो ब्राह्मण पवित्र. ॥ १ ॥

असंतुष्टोद्विजोनष्टःसंतुष्टश्चमहीपतिः॥ सल
ज्जागणिकानष्टनिर्लज्जाचकुलांगना ॥ २ ॥

दोहा—असंतोषतैंविप्रहत, नृपसंतोषतैंष्वारि ।
गनिकाबिनसैलाजतैं,लाजविनाकुलनारि ॥२॥

टीका—असंतोषी ब्राह्मण नष्ट. और महिपति राजा संतोषी होय तो नष्ट और गणिका लज्जासहित होय तो नष्ट. अरु कुलवान् स्त्री निर्लज्ज होय तो नष्ट ॥ २ ॥

दृढंविप्रसमाकीर्णंदृढोराजासधार्मिकःदृढा
पतिव्रतानारीगृहंतृणमयंदृढं ॥ ३ ॥

दोहा—दृढविप्रनसंजुतवसै, दृढधरमीनृपधार ।
दृढपतिवरतानारिनित, दृढत्रिनमयआगार ॥३॥

टीका—जिसजगे ब्राह्मण वसें वो स्थान दृढ, और सुधर्ममें चले वो राजा दृढ और पतिकी सेवा करे वो नारी दृढ और तृणमय घर दृढ ॥ ३ ॥

पूर्वाह्णेचकृषिंपश्येन्मध्यान्हेतुगृहंसदा ॥ अप
राह्णेधनंपश्येत्पुत्रंपश्येच्चनित्यशः ॥ ४ ॥

दोहा—प्रातसमैकृषिपेखियै, मध्यसमैगृहसूत ।
पहरतीसरेपेषधन, पेखियैनितहीपूत ॥ ४ ॥

टीका—प्रातसमें कृषिकर्मको देखना, और मध्यान्ह समैं गृहकृत्यको देखना और तिसरे प्रहरमें धनको देखना और पुत्रनको सदाकाल देखते रहना ॥ ४ ॥

मातामहानसेयोज्यागृहकार्येषुवैसुतः ॥ भा
र्याचधर्मकार्येषुनित्यमेवनियोजयेत् ॥ ५ ॥

दोहा—मातहातभोजनकरियै, गृहकारजसुतहात ।
सबवनिताकूंसूंपिए, धरमकाजकीबात ॥ ५ ॥

टीका—भोजनादिकके कार्यमे माताकों युक्त करना और घरके कार्य पुत्रकों सौपना, और धर्मके कार्यमें सदैव भार्याको युक्त करना ॥ ५ ॥

किंकरोतिनरःप्राज्ञःशूरोवाप्यथपंडितः ॥ दे
वोयस्यबलान्वेषीकरोतिविफलांक्रियां ॥६॥

दोहा—कहाकरैनरबुद्धिवँतहू, पंडितसूरप्रवीन ।
जेहिछलदेषतदैवनित, करैक्रियाफलहीन ॥६॥

टीका—बुद्धिवान् पुरुष अथवा शूर वीर पुरुष अथवा पंडित पुरुष क्या करैं क्योंकिं दैव जिनका छल देखे अरु क्रिया निर्फल करै ॥ ६ ॥

ऐश्वर्येवासुविस्तीर्णेऽव्यसनेवापिदारुणे ॥ रज्ज्वेवपुरुषोबद्धःकृतांतेनोपनीयते ॥ ७ ॥

दोहा—वडविभूतिविस्तारमैः अरुदारुनदुषमांहि ।
बँध्योजेवरीजेमजन, कृतपूरबफलपांहि ॥ ७ ॥

टीका—अतिविस्तार सहित ऐश्वर्यमें अरु अतिभयानक दुःखमें यह पुरुप रज्जुकी माफक वंधाहुवा काल करके प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

विद्ययासहमर्त्तव्यंनचदेयाकुशिष्यते ॥ विद्ययालालितोमूर्खःपश्चात्संपद्यतेरिपुः ॥ ८ ॥

दोहा—विद्याजुतमारिबौभलौकुसिषनदीजियैकोय ।
विद्यालालितमूढजन, पीछैंअरिसमहोय ॥ ८ ॥

टीका—विद्यासहित मरजाना, परंतु विनय रहित शिष्य को विद्या नहि देना क्योंकि विद्याकरके युक्त कियाहुवा मुरख पीछेसें वैरी होजाता है ॥ ८ ॥

उपकारसतेनापिदानैश्चात्यन्तविस्तरैः ॥ लालनैःप्रीतियोगैश्चह्यग्राह्योभगिनीसुतः ॥९॥

दोहा—नितहीसतउपगारतैं; अधिकदांनकेदैन ।
लालनतैंअतिप्रीतितैं, भगिनीसूतगहियैन ॥ ९ ॥

T

टीका–बहुतसे उपकारनसें और अत्यंतमोटेमोटे दानदेनेसें और लाड करनेसें फिर प्रीति करनेसेंभागिनी पुत्र अग्राह्य है ९

नाधिपत्यंसतादेयंभागिनेयायजातुचित् ॥
कालेनसोपिभवतिरिपुस्थानेमहारिपुः ॥ १० ॥

दोहा–विदुषनकबहूँदीजियै, भगिनीसुतसिरभार ।
समयपायपुनिहोतसोइ, अरिसमदुषदअपार १०

टीका–समजवान् पुरुष होय वो कदापि भगिनी पुत्रको धरका भार न सौंपे जो सौंपे तो वोहि भगनी पुत्र काल पायके दुःखदायक महान् शत्रु होजाता है ॥ १० ॥

यस्यनज्ञायतेशीलंकुलंविद्यानरस्यच॥कस्ते
नसहविश्वासंपुमानिच्छेद्विचक्षणः ॥ ११ ॥

दोहा–विद्याकुलबलशीलजेहि, नरकौजानियैनांहि ।
चतुरपुरुषविश्वासचित, कबहुनताहिकरांहि ११

टीका–जिस मनुष्यका शील कुल अरु विद्या नहिजानिये तो उसका विश्वास कौन चतुर पुरुष करैं अर्थात् न करैं ११॥

जननीदूषितायस्यनास्तिकश्चनरोहियः ॥स
र्वशास्त्रविदग्धोपिनविश्वास्यःकदाचन ॥ १२ ॥

दोहा–जननीदूषितजिनहिसों, नरनास्तीकनिहार ।
सरबशास्त्रवितहोततउ, नहिविस्वासलगार १२

टीका–जो नास्तिक मनुष्य है उसकी जननी दुषित है वो नास्तिक मनुष्य सबशास्त्रनको पडाहै तोभि विश्वास करने योग्य नहि ॥ १२ ॥

इतिश्रीलघुचाणक्येराजनीतिशास्त्रेचतुर्थोऽध्यायः

T

काप्रीतिःसहमार्ज्जारैः काप्रीतिरवनीपतेः ॥ ॥
गणिकाभिश्चकाप्रीतिःकाप्रीतिर्भिक्षुकैःसह १

दोहा—प्रीतिकहामंजारिपुनि, कहानृपप्रीतिकरेह ।
कहाप्रीतिगानिकाकहियै, कहाभिछुककोनेह १

टीका—मार्जार बिलावके साथ क्या प्रीति, और राजानके साथ क्या प्रीति, और गणिकाके साथ क्या प्रीति, और भिक्षुकनके साथ क्या प्रीति ॥ १ ॥

यथावृष्टिःसमुद्रेषुभुक्तस्योपरिभोजनं ॥ एवं
प्रीतिःखलैःसार्द्धमुत्पन्नेर्थैवसीदति ॥ २ ॥

दोहा—करिभोजनभोजनकारियै, सागरपरजिममेह ।
प्रीतिषलनइमपेषियै, कामपरचादुखदेन ॥ २॥

टीका—जैसें समुद्रमें वृष्टि होना निर्फल है और भोजन कीयेहुवेकुं फिर भोजन कराना वोभि निर्फल है, ऐसे दुष्टनके साथ प्रीति निर्फल है, कामपडे दुखदायक है ॥ २ ॥

पुस्तकेषुचयाविद्यापरहस्तेषुयद्धनं॥उपस्थि
तेषुकार्येषुनसाविद्यानतद्धनं ॥ ३ ॥

दोहा—विद्यापुस्तकमैवस; धनपरहाथरहांहि ।
कामपरैजबहीकहूं, नहिविद्याधननांहिं ॥ ३ ॥

टीका—पुस्तकमे रहीहुई विद्या, अरु परहस्तगत धन कामपरे जब वो विद्या अरु वो धन दोनो निरर्थक हैं ॥ ३ ॥

दीयतेस्वच्छहृदयैः पिंडोयेनैवपाणिना ॥
मार्जारइवदुर्वृत्तस्तमेवहिविलुंपति ॥ ४ ॥

दोहा–पावनहियवारेपुरुष, पिंडदांनदैपांनि ।
मंजारीजिमदुष्टजन; करैताहिहितहांनि ॥ ४ ॥

टीका–स्वच्छहृदयसे कोइ अच्छा पुरुष जिस हाथकरकें किसीको पदार्थ देताहै तब वो दुष्ट विलावकी परे तिसीकाही विगाड कर्ताहै ॥ ४ ॥

मागाःपिशुनविश्वासंममायंपूर्वसंगतः॥ चि
रकालंसुजीर्णोपिदशत्येवभुजंगमः ॥ ५ ॥

दोहा–पिसुनविसासनकीजियै पेषिबहुतपहिचांन ।
संगबसतअहिवृद्धतोउ, काटतहरैपरान ॥ ५॥

टीका–बहुतसी पहिचान होय तथापि पिशुन जो चाडी करने वालेका विश्वास कभी नहि करना क्योंकि चिरकालसें पास रहनेवाला जीर्ण होय गया है तोभि सर्प तो डसताहै ॥ ५ ॥

मुषित्वापरचित्तानितन्वंग्याःपतितौस्तनौ॥
परोपतापीयोन्योपिसकथंभद्रमश्नुते ॥ ६ ॥

दोहा–परकेचितहारिकैपरत, जोषितकेकुचजेम ।
परदुषकारीपुरुषइस, कहुदुषपावैकेम ॥ ६ ॥

टीका–परके चित्तको हरके स्त्रीके कुच नीचे पडते हैं तो परको पीडा देनेवाला कोइभी पुरुष सुख कैसें पावै ॥६॥

द्विजिव्हःक्रूरकर्माचखलएकांतदारुणः ॥ प
रस्यसहजंदोषंप्रकाशयतिनोमहान् ॥ ७ ॥

दोहा–क्रूरकरमद्वैजीहजिम, षलदारुनदुषषांन ।
सहजप्रकासतदोषपर, गुनढकिदेतमहांम ॥७ ॥

T

टीका—द्विजिव्ह कहिये सांप और क्रूरकर्मा मनुष्य इनमों खल अत्यंत दुखकी खान है, परके दोष सहजही प्रसिद्ध कर्ता है, और सज्जनजन ढंक देते हैं ॥ ७ ॥

द्विजिव्हयुद्वेगकरंक्रूरमेकांतदारुणं ॥ खलस्याहेश्चवदनमपकारायकेवलं ॥ ८ ॥

दोहा—उभयजीहसबत्रासकर, दारुनक्रूरअनंत ।
आंननखलकौअहिनकौ, केवलदुषदकहंत ॥८॥

टीका—सर्प है वो सबनको त्रास उपजानेवाला है, अरु क्रूर दुष्ट पुरुषहै वो तो निश्चैकरकें सबनको भयानकहै इन दोनोंका खल पुरुषका अरु सर्पका मुख केवल दुःख कारकही है ॥ ८॥

खलःसर्षपमात्राणिपरछिद्राणिपश्यति॥ आत्मनोबिल्वमात्राणिपश्यन्नपिनपश्यति ॥९॥

दोहा—षलसरसूकनसेअलप, परअवगुनपेषंत ।
निजअवगुनगिरिराजसे,देषतनहिंदेषंत ॥ ९ ॥

टीका—खल होताहै वो सरसवमात्रभि पराये छिद्रको देखता है परंतु आपके बिल्वफलके सदृश मोटे अवगूणको नहि देखता है ॥ ९ ॥

यश्चनिंबंपरशुनायश्चैनंमधुसर्पिषा ॥ यश्चैनं गंधमाल्याद्यैःसर्वस्यकटुरेवसः ॥ १० ॥

दोहा—छेदिपरसुतैंनींबकूं, मधुघृतमांहिमिलाय ।
स्रक्चंदनहिसुगंधिदिय,जेहिंकटुतानाहिंजाय ॥

टीका—जो कोइ निंबको परशुकर छेदन करै अथवा कोइ इस निंबको मधुसें तथा घृत खांडसें सेवन करैं, अ-

थवा कोई इसकी गंधमालादिकनसें पूजन करै तथापि निंब तो सबनको कटुकही है कभी मधुर नहि होता है ॥ १० ॥

परंक्षिपतिदोषेणवर्त्तमानःस्वयंतथा ॥ खल
श्चसहजंदोषंप्रकाशयतिनात्मनः ॥ ११ ॥

दोहा—औगुनआषैऔरके, आपचलैतेहिचाल ।
निजअवगुनषलकहतनां, बडदुषमूलविसाल ११

टीका—खलपुरुष औरनकों दूषणसे तिरस्कार करै अर्थात् परके अवगुण प्रकाशकरै और आप उसीहि अवगुनमें वर्त्तै इस्से खलपुरुषोंके स्वाभाविक दूषण प्रकाश होते हैं॥ ११ ॥

मक्षिकाव्रणमिच्छंतिधनमिच्छंतिपार्थिवाः ॥
नीचाःकलहमिच्छंतिशांतिमिच्छंतिसाधवः ११

दोहा—माषीमनव्रणकूंचहै, नीचाहिकलहचहंत ।
धनकूंचाहतभूमिपति,सांतिचहतनितसंत॥ १२॥

टीका—मक्षिका व्रणकी इच्छा करैं. और राजा धनकी इच्छा करैं और नीच कलहकी इच्छा करै और साधूशांतिकी इच्छा करै ॥ १२ ॥

बिप्राणांभूषणंविद्यामंत्रिणांराजभूषणं भूष
णंचपतिःस्त्रीणांशीलंसर्वस्यभूषणं ॥ १२ ॥

दोहा—विद्याभूषनविप्रनित, मंत्रिविभूषनराज वनि
तापतिभूषनविमल, सीलसकलसिरताज॥ १३॥

टीका—विप्रनका भूषण विद्या और मंत्रीजनका भूषण राजा औरस्त्रियनकाभूषण पती अरु सबनका भूषण शील॥ १३॥

इतिश्रीलघुचाणक्येराजनीतिशास्त्रेपंचमोऽध्यायः

T

सिंहरूपेणराजानोव्याघ्ररूपेणमंत्रिणः ॥ भृ
त्याश्चगृद्धरूपेणक्षयंयास्यंतिवैप्रजाः ॥ १ ॥

दोहा—सिंहरूपराजासही, मंत्रीव्याघ्रसमांन ।
गीधरूपचाकरगहै, नांसतप्रजानिदांन ॥ १ ॥

टीका—सिंह रूपसें राजा वर्त्ते अरु व्याघ्र रूपसें मंत्रि वर्त्ते और गृद्ध रूपसें भृत्य वर्त्ते तब प्रजा निश्चै नाशको प्राप्तहोतीहै

ब्रह्मस्वेनतुपुष्टांगहस्त्यश्वरथपत्तयः ॥ संग्राम
कालेसीदंतिराजानश्चतथाविधाः ॥ २ ॥

दोहा—रथहयगयपैदलनृपति, पुष्टविप्रधनपाय ।
जुद्धजुरैजेहिवारमै, भयतैंसबभागिजाय ॥ २ ॥

टीका—ब्राह्मणोंके द्रव्यकरके पुष्ट भये हैं अंग जिनके ऐसे हाथी, घोडा, रथअरुपायदल जिनका ऐसे वो राजा संग्रामके समय दुःख पाते हैं आर्थात् कामपडे सब हाथी घोडे भगजाते हैं ॥ २ ॥

अन्यायोपार्जितंवित्तंदशबर्षाणितिष्ठति ॥
प्राप्तेचैकादशेवर्षेसमूलंचबिनश्यति ॥ ३ ॥

दोहा—आँन्योधनअन्यायतैं, रहैवर्षदसपास ।
वीतेएकादशवरष, होतसमूलविनास ॥ ३ ॥

टीका—अन्यायसे पैदा कियाहुवा धन तो १० वर्षतक रहता है उपरांत ११ मा वर्ष आवतेहि मूलसहित सबद्रव्यनाश होजाय ॥ ३ ॥

वस्त्रंपापपरित्राणंबहुक्षीराश्चधेनव ॥ औषधं
बीजमाहारोयथालभ्यंतथार्जयेत् ॥ ४ ॥

T

दोहा—वसनविसदपदत्रानअरु, बहुतदुधारीगाय ।
औषधबीजअहाराजिम,आवततिमसंचाय ॥४॥

टीका—अच्छे वस्त्र और जूते और बहुतसा दूध देनेवालीगौ और औषध औरखेती करनेके लिये बीज और अच्छा भोजन इतनी वस्तु जिसिरीतिसें मिले वैसेही ग्रहण करलेना ॥ ४॥

शकटःशाखिनोगावोजालंमांसादनंवनं ॥
अनूपंपर्वतोराजादुर्भिक्षेनववृत्तयः ॥ ५ ॥

दोहा—सुरभीइंधनसकटतरु, जालपिसितआहार ।
वनअनूपनृपजीविका,नवदुर्भिषकीवार ॥ ५ ॥

टीका—दुर्भिक्ष दुकाल समय इस ९ प्रकारसें जीविका करना गाडा १ शाक भक्षण २ गौ रखता ३ मत्स्यजाल ४ मांसभक्षण ५ वनमें रहना ६ अथवा सुभिक्ष देशमें चलेजाना ७ अथवा पर्वतपर रहना ८ अथवा राजसेवा करना ९

एकविद्याप्रधानोपिबहुज्ञाताभवेन्नरः॥ सुभा
षितानिपठ्यंतेयेनशास्त्रोध्दृतानिवै ॥ ६ ॥

दोहा—विद्याइकहिविचारतैं, पावतपंडितपंथ ।
पढैसुभाषितप्रीतसूं, ग्यातासोसबग्रंथ ॥ ६ ॥

टीका—एकविद्यामें प्रवीन है वोभि अनेक शास्त्रसें उद्धार कियेहुवे सुभाषित श्लोकनकोपढके अनेक शास्त्रनका जाण पंडित हो जाता है॥ ६ ॥

सुभाषितमयंद्रव्यंसंग्रहंनकरोतियः॥ सचप्र
स्तावयज्ञेषुकांप्रदास्यतिदक्षिणां ॥ ७ ॥

दोहा—सदासुभाषितद्रव्यकौं, नहि संचयकरिलेह ।
सोनरजगप्रस्तावमैं, कहादच्छिनादेह ॥ ७ ॥

T

टीका–सुभाषित श्लोकमइ द्रव्यका संग्रह जिसनेन किया वो प्रस्ताव यज्ञमें क्या दक्षिणादेगा आर्थत् समय आये सभाके बीचमें सुभाषित विगर क्या वचनका उच्चार करेगा ७

शूराश्चकृतविद्यश्च रूपवत्यश्चयास्त्रियः॥ यत्र यत्रगमिष्यंतितत्रतत्रकृतादराः ॥ ८ ॥

दोहा–सूरवीरपंडितपुरुष, रूपवतीबहुनार ।
जहांजहांजाबततहां, आदरहोतअपार ॥ ८ ॥

टीका–शूर वीर पुरुष और पंडित और रूपवान् स्त्रियां यह तीन जने जिस २ जगे जाते हैं वहांहि आदर होता है ८

विद्वत्वंचनृपत्वंचनैवतुल्यंकदाचन ॥ स्वदेशेपूज्यतेराजाविद्वान्सर्वत्रपूज्यते ॥ ९ ॥

दोहा–पंडितताभूपतिपनौ, निसचैइकसमनांहि ।
राजापूजियैदेशनिज, पंडितसबजगमांहि ॥९॥

टीका–पंडितपना और राजापना कोइसमे समान नहि, क्योंकि राजा तो स्वदेशमें पूजित है अरु पंडित सबदेशमें पूजित होता है ॥ ९ ॥

विद्ययाशस्यतेलोकेपूज्यतेचोत्तमैःसदा ॥ विद्याहीनोनरःप्राज्ञःसभामध्येनशोभते ॥१०॥

दोहा–विद्यातैंआदरबढै, पूजतलोकप्रवीन ।
सभानसोभतप्राज्ञनर,होतसुबिद्याहीन ॥ १०॥

टीका–विद्यापढनेसें लोकमें आदर बधताहै अरु उत्तम मनुष्यों करकें पूजनीक होताहै और विद्याहीन बुद्धिवान् पुरुषभि सभाके बीचमें नहि शोभता है ॥ १० ॥

रूपवानपिमूर्खोहिगत्वातुविपुलांसभां॥संर
क्षेतस्वकांजिव्हांभार्यांदुश्चारिणींयथा ॥११॥

दोहा—रूपवंतमूरषपुरुष, जातसभाकेहिकाम ।
जिह्वानिजवसराषियै,ज्युंविभिचारिनिवांम ११

टीका—रूपवंत मूरख पुरुष, मोटी सभाके बीचमें जायके आपकी जीभको वश राखैं जैसें व्यभिचारिणी स्त्रीकों वशमें राखै तैसे ॥ ११ ॥

इतिश्रीलघुचाणक्येराजनीतिशास्त्रेषष्ठोऽध्यायः

किंकुलेनविशालेनविद्याहीनस्यदेहिनः
अकुलीनोपियोविद्वान्देवताभिःसपूज्यते ॥१॥

दोहा—कहाहोतबडवंसतैं, जोनरविद्याहीन ।
परगटसुरतैंपूजियैं, विद्यातैंअकुलीन ॥ १ ॥

टीका—विद्याहीन मनुष्यके मोटे कुलमें जन्म लेनेसें क्या प्रयोजन सिद्ध होता है और कुलहीन पुरुष है परंतु विद्या पढा है तो उसकी देवता पूजन कर्त्ते हैं ॥ १ ॥

एकेनापिसुपुत्रेणविद्यायुक्तेनसाधुना ॥
कुलंपुरुषसिंहेनचंद्रेणेवप्रकाश्यते ॥ २ ॥

दोहा—विद्यासंजुतएकही, जोसपूतसुतहोत ।
बँसउदीपनकरतजिम, विधुतैंरैनउदोत ॥ २ ॥

टीका—एकभि विद्यायुक्त अच्छे सत्पुत्र करके कुलका उद्योत होजाता है जैसें चंद्रमाकरकैं रात्रीका प्रकाश होता ह तैंसें ॥ २ ॥

T

किंजातैर्बहुभिःपुत्रैःशोकसंतापकारकैः ॥वर
मेकःकुलालंबीयत्रविश्राम्यतेकुलं ॥ ३ ॥

दोहा—कहासोकसंतापकृत, जोबहुहोतकपूत ।
भलोएकमनभावतो, सबकुलपालकपूत ॥ ३ ॥

टीका—शोक संतापके करनेवाले ऐसे बहुतसेकुपुत्र जन्मे तो उनसें क्या, अरु कुलका पालक सुपुत्र एकभी जन्मै तो अच्छा ॥ ३ ॥

एकेनापिसुपुत्रेणसिंहीस्वपितिनिर्भयं ॥ स
हैवदशभिःपुत्रैर्भारंवहतिगर्दभी ॥ ४ ॥

दोहा—सिंहनिसोवतनीदसुष, सुतएकहिसरदार ।
साहितसदादससुतनके, षरीवहतसिरभार ॥४॥

टीका—एकभि सुपुत्रके जन्मनेसें सिंहणी निर्भय होके शयन कर्ती है अरु गर्दभी दशपुत्रके जन्मनेंसेंभी पुत्रसहित भारकों वहती है ॥ ४ ॥

एकेनापिसुवृक्षेणपुष्पितेनसुगंधिना ॥ आ
मोद्यतेवनंसर्वंसुपुत्रेणकुलंयथा ॥ ५ ॥

दोहा—एकहितरुशुभसुमनतैं, वनसबहोतसुवास ।
ऐसैंइएकसपूतसुत, कुलसबकरतप्रकास ॥ ५ ॥

टीका—पुष्पित सुगंधिवान् ऐसें एकभि अच्छे वृक्षकरके सब वन सुगंधियुक्त हो जाता है जैसें सुपुत्रकरकै कुलशोभित होता है तैसे ॥ ५ ॥

एकोपिगुणवान्पुत्रोमानिर्गुणशतंभवेत् ॥
एकश्चंद्रःस्तमोहंतिनचतारासहस्रकं ॥ ६ ॥

T

दोहा–एकहिसुतगुनवंतभल, गुनबिनसतकेहिकांम
हिमकरएकहितमहरै, उडुगनकोटिअकांम॥६॥

टीका–गुणवान पुत्र तो एकभि अच्छा अरु निर्गुण पुत्र, सौभि अच्छे नहि जैसें एक चंद्रमा सब अंधकार मिटादेता है अरु तारा सहस्रसेभि कछु नहि होता है ॥ ६ ॥

सुखार्थीसंत्यज्येद्विद्यांविद्यार्थीसंत्यजेत्सुखं ॥
सुखिनस्तुकथंविद्याकुतोविद्यार्थिनस्सुखम् ॥७॥

दोहा–सुषअरथीविद्यातजै,विद्यारथिसुषलैन ।
सुषअरथीविद्याकहां,कहांविद्यारथिचैन ॥ ७ ॥

टीका–सुखार्थी विद्याको त्याग करै अरु विद्यार्थी सुखको त्याग करै सुखि पुरुषके विद्या कहांसें अरु विद्यार्थीको सुख कहांसें ॥ ७ ॥

नात्युच्चाशिखरोमेरुर्नातिनीचंरसातलं ॥
व्यवसायोद्यतानांचनास्त्यपारोमहोदधिः ॥८॥

दोहा–नहीरसातलनीचअति,ऊंचनमेरुकहंत ।
उदधिअपार न उनहुकै,जेनरउद्यमवंत ॥ ८ ॥

टीका उद्यमी पुरुषेके मेरु अति ऊंचा नहि, और रसातल अतिनीचा नहि, और महोदधि समुद्र अपार नहि. अर्थात् उद्यमी पुरुषके कछु कठिन नहि ॥ ८ ॥

मांसमेदोमयैरुक्षैर्मूर्खैश्चाक्षरवर्जितैः ॥
पशुभिःपुरुषाकारैर्भाराक्रांताचमेदिनी ॥ ९ ॥

दोहा–मांसमेदमज्जानतैं; कियेप्रगटकरतार ।
निपटनिरच्छरपुरुषपसु, भूकहुंभारतभार ॥ ९ ॥

टीका अक्षरवर्जित मुर्ख है वो तो केवल मांस मद मज्जा दिकनसें वधेहुवे पुरुषके आकार पशु है तिनसे पृथ्वी भारभूत है ॥ ९ ॥

पुस्तकंप्रत्ययाधीतंनाधीतंगुरुसन्निधौ ॥
नशोभतेसभामध्येजारगर्भाइवस्त्रियः ॥१०॥

दोहा—पुस्तकतैंविद्यापढी, गुरुमुषलह्योनज्ञांन ।
सभामध्यसोभतनज्यूं,जारगर्भतियजांन ॥१०॥

टीका—किसीनें पुस्तकसें विद्या पढी परंतु गुरुमुखसें विद्या न पढी वो पुरुष सभाके बीचमें नहि सोभता है जैसें पर गुरुषका धारण किय हुवा गर्भ ऐसी स्त्रियांशोभितीनहिं तैसे ॥ १० ॥

एकमप्यक्षरंयस्तुगुरुःशिष्यंनिवेदयेत् ॥
पृथिव्यांनास्तितद्द्रव्यंयद्दत्वाचानृणीभवेत् ॥

दोहा—एकहिअच्छरकारिकृपा, गुरुसिषव्रतसिषताहि ।
जगमैवस्तुनजांनियै, देऊरनव्हैजाहि ॥ ११ ॥

टीका गुरु कृपाकरके एकहि अक्षर शिष्यको पढावे, तो उस गुरुको जो द्रव्य देके शिष्य अनृणी हो जाय, ऐसा द्रव्य तो जगतमे है नहि ॥ ११ ॥

एकाक्षरप्रदातारंयोगुरुंनैवमन्यते ॥
शुनोयोनिशतंगत्वाचांडालेष्वपिजायते ॥१२॥

दोहा—इकअच्छरप्रदकहियगुरु,ताकहुंनिंदतकोय ।
लहैजानिसतस्वानकी,स्वपचहोतपुनिसोय १२

टीका—एक अक्षरको पढाने वाले गुरुको शिष्य नहि मानेगा, वो श्वानकी १०० योनिको भोगके चांडालन मैजन्मता है ॥ १२ ॥

T

अक्षराणिविचित्राणियेनजानंतिमानवाः ।
बलीवर्दसमास्तेतुखुरश्रृंगविवर्जिताः ॥ १३ ॥

दोहा—अच्छरशास्त्रविचित्रअति, जेनपढ़ैसुषधाम
सींगपूंछविनवृषभसे, वृथाधरचौनरनाम ॥१३॥

टीका—चित्र विचित्र अनेक प्रकारके अक्षर हैं, तिनको ये मनुष्य नहि जानते हैं अर्थात् विद्या नहि पढे हैं वो मनुष्य खुर श्रृंग बर्जित वृषभके तुल्य हैं ॥ १३ ॥

इतिश्रीलघुचाणक्येनीतिशास्त्रेसप्तमोऽध्यायः ॥७॥

धनवानकुलीनोपिसर्वत्रविजयीभवेत् ॥
सुविद्याख्यातवंशोपिनिर्द्धनःपरिभूयते ॥ १ ॥

दोहा—जगविजईधनवंतजन, होतजदपिकुलहीन ।
विद्याष्यातसुवंसतोउ,, निरधनपरआधीन॥ १ ॥

टीका—कुलहीन है तथापि धनवान है वो सब जगतमें सुखी है, और विद्यावानभीहै और कुलवानभी है, परंतु निर्धन है वो दुःखी होता है ॥ १ ॥

धनहीनोनहीनस्तुधनंवाकस्थनिश्चलं ॥ वि
द्याहीनश्चयःकश्चित्सहीनःपरिकीर्तितः ॥ २ ॥

दोहा—हीननहींधनहीनजन, धनथिरनांहिप्रवीन ।
हीननऔरवषांनियै, विद्याहीनसुहीन ।

टीका—धनकरके हीन हैं वो हीन नहि कहलाता है क्योंकि धन किसीके निश्चल नहि. तब विद्याहीन जो कोई है वो हीन कहा है । २ ॥

T

वयोवृद्धास्तपोवृद्धायेचवृद्धाबहुश्रुताः ॥ स
र्वेतेधनवृद्धस्यद्वारेतिष्ठतिकिंकराः ॥ ३ ॥

दोहा–तपोवृद्धवयवृद्धवर, जेश्रोताबहुजांन ।
सबहीतेधनवृद्धकै, द्वारषरेदरवांन ॥ ३ ॥

टीका–जगत्में कितनेक वयकरके वृद्ध हैं कितनेक तप करके वृद्ध हैं, अरु कितनेक बहुश्रुत वृद्ध हैं, परंतु यह सब धनवृद्ध जो धनवान् उसके द्वारपर किंकर समान होके स्थित रहते हैं ॥ ३ ॥

वरंहरिणवद्भक्तंहरितंकाननेतृणं ॥ नचहीना
क्षरप्रोक्तंदेहीतिकृपणंवचः ॥ ४ ॥

दोहा–मृगजैसैंवनमांहितृन, चरियौभलदिनरैन ।
देहुहमैंकछुहीनइम, कहिबौभलौनवैन ॥ ४ ॥

टीका–बनमै जायके हरित तृण हरिणकी परे खाना वो अच्छा परंतु यह हमको देओ ऐसें दीनतासें कृपण वचन बोलना वो अच्छा नहि ॥ ४ ॥

विद्यायाभाजनंकश्चित्कश्चिदर्थस्यभाजनं ॥
उभयोर्भाजनंकश्चित्कश्चिन्नोभयभाजनं ॥

दोहा–कोउविद्याभाजनकहिय,कोउधनभाजनकीन ।
आहिउभयभाजनअपर, उभयहीनकोउदीन ५

टीका–कोई विद्याका पात्र है, अरु कोई धनका पात्र है, और कोई विद्या अरु धन दोनोंका भाजन है, कोई दोनोंकाभी नहि हैं ॥ ५ ॥

पंचैतानिहिसृज्यंतेगर्भस्थस्यैवदेहिनः॥ आ
युःकर्म्मचवित्तंचविद्यानिधनमेवच ॥ ६ ॥

दोहा—पंचरचैविधिनरनकै, उदरपरैजेहिवार ।
आयुकरमअरुवित्तपुनि, विद्यामरनबिचार ॥६॥

टीका—गर्भमें रहे हुवे जीवके यह पांच वस्तु विधाता रचदेता है, आयु १ कर्म २ धन ३ विद्या ४ अरु मृत्यु५॥६

लिखिताचित्रगुप्तेनललाटेक्षरमालिका ॥ न
सामार्जयितुंशक्यापंडितैस्त्रिदशैरपि ॥ ७ ॥

दोहा—चित्रगुप्तनिजकरनतैं, लिषेसुअंकललार ।
सुरनरपंडितअपरकोउ, टारिनसकैकलार ॥ ७ ॥

टीका—जो चित्रगुप्तने ललाटमें अक्षर लिखे हैं वो अक्षर मिटानेको कोइभि पंडित तथा देवादिक समरथ नहि ॥ ७ ॥

भवितव्यंयथायेननतद्भवतिचान्यथा ॥ नी
यतेतेनमार्गेणस्वयंवातत्रगच्छति ॥ ८ ॥

दोहा—होत जथाभवितव्यता, टारीसोनटरंत ।
जात जहाँजनपंथजेहि, आपहिकैआवंत ॥ ८ ॥

टीका—जैसा होनहार है वोहि होता है, परंतु अन्यथा होता नहि तिन मार्गकरके कोइ और लेजाता है, अथवा आप वहां चला जाता है ॥ ८ ॥

सुखस्यदुःखस्यनकोपिदाता परोददातीति
कुबुद्धिरेषा ॥ पुराकृतंकर्मतदेवभुज्यतेशरी
रतोतःस्मरयत्वयाकृतं ॥ ९ ॥

दोहा—सुषददुषदनहिऔरकोउ, कहैऔरसोइकूर ।
पुन्यपुराकृतपाइयै, जनथिरहोहुजरूर ॥ ९ ॥

टीका—सुख दुःखका दाता और कोइ नहि है, सुख

T

दुःखका दाता और है, ऐसा कहना वो मिथ्या है, पहलै किया हुआ शुभाशुभ कर्मही भोगनेमें आता है, ऐसा विचार करना ॥ ९ ॥

येनयत्रैवभोक्तव्यंसुखंवादुःखमेवच ॥ सतत्र बद्धोरज्ज्वेवबलाद्दैवेननीयते ॥ १० ॥

दोहा—जाकूंजितनौपाइवौ, सुखअरुदुषजेहिठौरि ।
बंध्यौजेवरीजेमजन, जातदैववसदौरि ॥ १० ॥

टीका—जिसपुरुषने जहां सुख दुःख भोगने योग्य है जहां रज्जुसें बंधाहुवा हो तैसे प्रारब्धसें पहुंचाया जाता है ॥१०॥

संसारविषवृक्षस्यद्वेफलेअमृतोपमे ॥ काव्यामृतरसास्वादःसंगमःसज्जनैःसह ॥ ११ ॥

दोहा—विषतरुसमसंसारतेहि, द्वैफलअमृतअभंग ।
काव्यसुधारसपांनपुनि, साधुनकौसतसंग ॥११॥

टीका—संसाररूप विषवृक्षके अमृत समान दोय फल हैं काव्यामृत रसका स्वाद अरु सज्जन पुरुषनकी संगती॥११॥

वनेरणेशत्रुजलाग्निमध्ये महार्णवेपर्वतमस्तकेवा ॥ सुप्तंप्रमत्तंविषमस्थितंवारक्षंतिपुण्यानिपुराकृतानि ॥ १२ ॥

दोहा—वनरनअरिजलअनलगिरि,वारिधिविषमीवार ।
रतप्रमादमैंनीदमैं, पुन्यपुराकृतलार ॥ १२ ॥

टीका—वनमें संग्राममें शत्रु जल अग्नीके मध्यमें मोटे समुद्रमें. तथा पर्वतके मस्तकपर. सुप्तकी प्रमत्तकी विषम स्थानमें स्थितकी इतनी जगे पूर्वकृत कर्म रक्षाकरते हैं ॥१२॥

प्राप्तव्यमर्थंलभतेमनुष्योदेवोनतंलंघयितुंस

मर्थः ॥ तस्मान्नशोकोनहिविस्मयोवायद
स्मदीयंनहितत्परेषां ॥ १३ ॥

दोहा—प्रापतजोप्रारबधमैं, कहासुरदुरिकरेह ।
विस्मयशोकनकरियमन,अपनौऔरनलेह १३॥

टीका—दैवसें प्राप्त होनेवाले पदार्थको मनुष्य प्राप्त होता है. तिनको देवभि उल्लंधन करनेको समर्थ नहि. तिसकारणसे हर्ष. शोच. कुछभि नहि करना. क्योंकि जो अपना है वो परका कभी नहि होता है ॥ १३ ॥

दोहा—सकलअलंकृतसंसकृत, चानकलघुसुषदाय ।
भाषारचिभावनभनैं,अमलअष्टअध्याय ॥ १४ ॥

इतिश्रीभावनादासविरचितेभाषाटीकालघुचाण
क्येराजनीतिशास्त्रेऽष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

अथवृद्धचाणक्यलिष्यते.

दोहा.

उरधरिअतिअनुरागतैं, गुरुदामोदरदास ।
भाषाचानकवृद्धभल, भनतभावनादास ॥ १ ॥

प्रणम्यशिरसाविष्णुंत्रैलोक्याधिपतिं प्रभुं॥
नानाशास्त्रोद्धृतंवक्ष्येराजनीतिसमुच्चयम् १

दोहा—प्रभुत्रिलोकपतिविष्णुप्रति, सिरतैंवंदिसप्रीति ।
सारसारसबग्रंथगहि, कहूंनिचयनृपनीति ॥२॥

T

टीका—तीन लोकके अधिपति प्रभु ऐसे विष्णुका मैं मस्तकसें नमस्कार करके नाना शास्त्रनसें उद्धार कीये हुवे नीतिशास्त्रके समूहकों मैं कहूंगा ॥ १ ॥

अधीत्येदंतथाशास्त्रंनरोज्ञास्यतितत्वतः॥
धर्मोपदेशविज्ञानंकार्याकार्यंशुभाशुभं ॥२॥

दोहा—तत्वसहितपढिशास्त्रयह, नरजांनतसबबात ।
काजअकाजशुभाशुभहि,धरमरीतिविष्यात ॥२॥

टीका—जो कोइ मनुष्य इस नीतिशास्त्रको तत्वकरके पढेंगा; वो धर्मके उपदेशकों तथा शुभाशुभ कार्य अकार्यको अच्छी तरे जानेगा ॥ २ ॥

तदहंसंप्रवक्ष्यामिनराणाबुद्धिवर्द्धनं ॥ येन
विज्ञानमात्रेणसर्वज्ञत्वंप्रजायते ॥ ३ ॥

दोहा—मैसोइअबवरननकरूं, अतिहितकारकअज्ञ ।
जाकेजानतहोतजन, सबहीबिधसर्बज्ञ ॥ ३ ॥

टीका—तिस नीतिशास्त्रको अब मैं कहूंगा मनुष्योंकी बुद्धि वधानेके लिये जिसके जाननेही सब शास्त्रोंका जाण-पणा हो जाताहै ॥ ३ ॥

मूर्खशिष्योपदेशेनदुष्टस्त्रीभरणेनच ॥ द्विष
तांसंप्रयोगेणपंडितोप्यवसीदति ॥ ४ ॥

दोहा—उपदेसंतसिषमूढकहुँ, विभिचारिनिढिगवास।
अरिंकौकरतविसासउर, विदुषहुलहतविनास ४

टीका—मूर्ख शिष्यको उपदेश देनेसे और दुष्ट स्त्रीका स्वीकार करनेसें और शत्रुनका विश्वास रखनेसें पंडि-तभी दुःखी होजाता है ॥ ४ ॥

T

दुष्टाभार्याशठंमित्रंभृत्याश्चोत्तरदायकाः ॥
ससर्प्येचगृहेवासोमृत्युरेवनसंशयः ॥ ५ ॥

दोहा–भामिनिदुष्टा मित्रसठ, प्रतिउत्तरपदभृत्य ।
अहिजुतबसतअगारमैं, सबविधिमारिबोसत्य ५ ॥

टीका–दुष्ट भार्या, मूर्खमित्र, और नोकर प्रत्युत्तर देनेवाले और सर्पसहित घरमें रहना इतनें योग मिलें उसकी मृत्यु अवश्य होय ॥ ५ ॥

आपदर्थेधनंरक्षेद्दारान्रक्षेद्धनैरपि ॥ आत्मानं
सततंरक्षेद्दारैरपिधनैरपि ॥ ६ ॥

दोहा–धनगहिराषहुविपतहित, धनतैंबनिताधीर ।
तजिवनिताधनकूंतुरत, सबतैंरषहुशरीर ॥ ६ ॥

टीका–आपदाके लिये धनकी रक्षा करनी, और धनकरके स्त्रियोंकी रक्षा करनी और दाराकरके धनकरके आत्माकी निरंतर रक्षा करनी ॥ ६ ॥

त्यजेदेकंकुलस्यार्थेग्रामस्यार्थेकुलंत्यजेत् ॥
ग्रामंजनपदस्यार्थेआत्मार्थेपृथिवींत्यजेत् ७

दोहा–कुलहीतत्यागियएककूं, गृहहुछांडिकुलग्राम
जनपदहितग्रामहितजहु,तनहितअवनितमांम ७

टीका–कुलके हितके अर्थ एकको त्याग देना और ग्रामके अर्थ कुलको त्याग देना, और जनपद देशके अर्थ ग्रामको त्याग देना और आत्माके अर्थ सब पृथ्वीका त्याग करना ॥ ७ ॥

चलत्येकेनपादेनतिष्ठत्येकेनपंडितः ॥ नास
मीक्ष्यपरंस्थानंपूर्वमायतनंत्यजेत् ॥ ८ ॥

दोहा—चलतविदुधइकचरनतैं, एकहुंतैंठहरंत ।
नहिदेषेपरठोरकुं, पूरबठौरतजंत ॥ ८ ॥

टीका—पंडितपुरुष एक पगसें चलता है, अरु एक पगसें स्थित रहता है परंतू आगले स्थानको बिगर देखे पूर्वके स्थानको त्याग नहि करै ॥ ८ ॥

यस्मिन्देशेनसन्मानंनवृत्तिर्नचबांधवाः ॥
नचविद्यागमःकश्चिद्वासंतत्रनकारयेत् ॥९॥

दोहा—जहांनआदरजीविका, नहिप्रियबंधुनिवास ।
नहिविद्याजेहिदेसमैं, सवहुनदिनइकबास ॥९॥

टीका—जिस देशमे सन्मान नहि अरु जीविका चले नहि, और बांधवभि नहि और विद्याभ्यासभि नहि तहां कभि नहि रहना ॥ ९ ॥

पंचयत्रनविद्यंतेनतत्रदिवसंवसेत् ॥ गणि
कःश्रोत्रियोराजानदीवैद्यस्तुपंचमः ॥ १० ॥

दोहा—गणिकवेदवितभूपअरु, नदीवैद्यपुनिसोय ।
वसहुनांहिइकदिवसतँहँ,जँहँयहपंचनहोयँ १०॥

टीका—जिसजगे यह पांच वस्तु न होय तिसजगे एक दिनभि नहि रहना, गणक ज्योतिषी १ वेदपाठी २ राजा ३ नदी ४ अरु पांचमो वैद्य ५ ॥ १० ॥

पंचयत्रनविद्यंतेनकुर्यात्तत्रसंगतिं ॥ लोक
यात्राभयंलज्जादाक्षिण्यंत्यागशीलता॥११॥

दोहा—दानदच्छतालाजभय जात्रालोगनजांन ।
पंचनयहजह्वांपेषये, तहांनवसहुसुजांन ॥ ११ ॥

टीका–जिसमें यह पांच पदार्थ न होय उनकी संगत नहि करना.लौकीक व्यवहार १ भय २ लज्जा ३ चतुराई ४ और दातृत्वपणा ५ ॥ ११ ॥

आतुरेव्यसनेप्राप्तेदुर्भिक्षेशत्रुविग्रहे ॥ राज
द्वारेश्मशानेचयस्तिष्ठतिसबांधवः ॥ १२ ॥

दोहा–दुषआतुरदुरभिक्षमै, अरिजबकलहअभंग ।
भूपतिभौंनमसानमैं,बंधुसोईरहैसंग॥१२॥

टीका–आतुरपणेमें और दुःखप्राप्तभये, और दुर्भिक्षमें शत्रुसें कलह होय उस्समें राजद्वारमें श्मशानमें इतनी जगें संग रहें वो बांधव ॥ १२ ॥

ज्ञातव्याःप्रेषणेभृत्याःबांधवाव्यसनागमे ॥
मित्रंचापत्तिकालेचभार्याचविभवक्षये ॥ १३॥

दोहा–काजचलाएपरषचर,बंधुपरषदुषहोय ।
मित्रपरषियतुविपतिमैं,विभवविनासिततोय १३

टीका–काम काज करणेके लिये भेजणेमे (भृत्य) दासनकी परीक्षा करनाहै और दुःख आये बांधवोकी आपदा आये मित्रकी, धन क्षीण भये स्त्रीकी परीक्षा करना ॥ १३॥

योध्रुवाणिपरित्यज्यचाध्रुवाणिनिषेवते ॥
ध्रुवाणितस्यनश्यंतिचाध्रुवंनष्टमेवच॥१४॥

दोहा–ध्रुवकूंतजिअध्रुवगहै,चितमैंअतिसुषचाहि ।
ध्रुवतिनकैनासततुरत,अध्रुवनष्टहुआदि ॥१४॥

टीका–जो पुरुष ध्रुवपदार्थको त्याग करकें अध्रुव पदार्थकों सेवन करे तिसके ध्रुवपदार्थ नाश होजाता है अरु अध्रुवतो नष्टही है ॥ १४ ॥

T

वरयेत्कुलजांप्राज्ञोविरूपामपिकन्यकां॥रू
पयुक्तांननीचस्यविवाहस्सदृशेकुले॥१५॥

दोहा—कुलजातियविरूपतोउ, चतुरवरैकरिचाह ।
रूपवतीतोउनीचतजि,समकुलकरियविवाह १५

टीका—चतुर पुरुष हैं वो तो कुरूपभि है तथापि कुलीन कन्याको ग्रहण करै परंतु रूपयुक्त नीच कुलकी कन्याको ग्रहण न करै क्योंकि विवाह समान कुलमें करना अच्छा होताहै ॥ १५ ॥

नदीनांचनखीनांचश्रृगीणांशस्त्रपाणिनां ॥
विश्वासोनैवकर्त्तव्यःस्त्रीषुराजकुलेषुच॥१६॥

दोहा—सरितासृंगीशस्त्रकर,अरुजितनेनषवंत, ।
तियकौनृपकुलकौतथा,करहुविसासनमिंत १६॥

टीका—नदियांका और नखवाले सिंहादिकनका और शृंगवाले वृषभादिकना शस्त्र हाथमे लिये हुवे शत्रुनका और स्त्रियनका तथा राजकुलका विश्वास नहि करना १६

विषादप्यमृतंग्राह्यममेध्यादपिकांचनं॥ नी
चादप्युत्तमांविद्यांस्त्रीरत्नंदुष्कुलादपि ॥१७॥

दोहा—गहहुसुधाविषतैंकनक,मलतैंगहुकारिजत्न ।
नीचहुतोंविद्याविमल, दुसकुलतैंतियरत्न॥१७

टीका—विषसें पण अमृत ग्रहण करना और कांचन अपवित्र स्थानसें ग्रहण करना और उत्तम विद्या नीचके पाससेभि लेलेना. ऐसे स्त्रीरत्न नीचकुलसेंभि ग्रहण करलेनी

स्त्रीणांद्विगुणआहारोलज्जातासांचतुर्गुणा ॥
षट्गुणोव्यवसायश्चकामश्चाष्टगुणःस्मृतः ॥१८॥

दोहा–तियअहारदेषियदुगुण, लाजचतुरगुनजाँन ।
षटगुनतेंहिव्यवसायनित, कामअष्टगुनमांन १८

टीका–पुरुषोंसें स्त्रियांका आहार दुगुणा, और लज्जा चौगुणी (व्यवसाय) हठ छगुणा और काम आठगुणा कहा है ॥ १८ ॥

इतिश्रीवृद्धचाणक्येराजनीतिशास्त्रेप्रथमोध्यायः १

अनृतंसाहसंमायामूर्खत्वंचकृतघ्नता ॥
अशौचंनिर्घृणत्वंचस्त्रीणांदोषाःस्वभावजाः ॥१॥

दोहा–अनृतसीघ्रतमूढता, कपटरुकृतघनताइ ।
निरदयतारुमलीनता, तियमैसहजरहाइ ॥ १ ॥

टीका–झूट बोलना. हठ राखणा, कपटाइ मूर्खपणा कृतघ्नपणा, अपवित्रपणा निर्दयपणा यह ७ स्त्रियोंके स्वाभाविक दोष हैं ॥ १ ॥

भोज्यंभोजनशक्तिश्चरतिशक्तिर्वरःस्त्रियः ॥
बिभवेदानशक्तिश्चनाल्पस्यतपसःफलं ॥ २ ॥

दोहा–भोजनभोजनशक्तिरति, शक्तिसदावरनारि ।
विभवदानकीशक्तियह, बडतपफलसुखकारि २

टीका–अच्छा भोजन, १ और भोजन करनेकी शक्ति और स्त्रियादिकनसें भोग करनेकी शक्ति ३ और अच्छी स्त्रिये, और द्रव्य छते दान देनेंकी शक्ति ये पांच होना अल्प तपस्याका फल नहि है ॥ २ ॥

यस्यपुत्रावशेभक्ताभार्याछंदानुगामिनी ॥
विभवेल्पेपिसंतोषस्तस्यस्वर्गइहैवहि ॥ ३ ॥

दोहा–सुतआग्याकारीजिनहि, अनुगामिनितियजान।
विभवअलपसंतोषतेहि, सुरपुरइहापिछांन॥ ३॥

टीका–जिनके पुत्र आग्याकारी और स्त्रीभि पतिव्रता हुकुममें चलनेवाली और अल्पविभवमें संतोषहै उसके इह लोकमेंहि स्वर्ग है॥ ३॥

तेपुत्रायेपितुर्भक्ताःसपितायस्तुपोषकः॥
तन्मित्रंयत्रविश्वासंसाभार्यायत्रनिर्वृतिः॥ ४॥

दोहा–तेसुतजेपितुभक्तिरत, हितकारकपितुहोय।
जेहिबिसाससोइमित्रबर,सुषदायकतियसोय॥ ४॥

टीका–जो पिताकी भक्ति करें वो पुत्र, और पालना करै वो पित्ता जिसमें विश्वास होय वो मित्र, अरु सुखदा-यक होय वो स्त्रि॥ ४॥

परोक्षेकार्यहंतारंप्रत्यक्षेप्रियवादिनं॥ वर्जये
त्तादृशंमित्रंविषकुंभंपयोमुखं॥ ५॥

दोहा–कारजहनतपरोछमैं, प्रियवचमिलतविशेष।
तेहिसज्जनकूंदूरितज,विषघटपयमुषपेष॥ ५

टीका–परोक्षमैं कार्यका नाश करै अरु प्रत्यक्षमें प्रिय वचन बोले वो विषका घडा अरु मुखपर दूध ऐसें मित्रको त्याग देना॥ ५॥

नविश्वसेत्कुमित्रस्यमित्रस्यापिनविश्वसेत्॥
कदाचित्कुपितोमित्रःसर्वगुह्यंप्रकाशयेत्॥ ६॥

दोहा–नहिबिश्वासकुमितकर, कीजियमितहुकौन।
कहहिमितकबुकोपकरि, गोपहुसबदुषमौन॥ ३॥

टीका—कुमित्रका विश्वास नहि करना और मित्रकामि विश्वास नहि करना. क्योंकि कदाचित् मित्र कोपयुक्त हो-जाय तो सब गुह्यको प्रगट कर देताहै ॥ ६ ॥

मनसाचिंतितंकार्यंवाचानैवप्रकाशयेत् ॥
मंत्ररक्षणगूढात्माकार्येष्वेवनिवेदयेत् ॥७॥

दोहा—मनतैचिंतितकाजजो, बैननतैंकहियैं न ।
मंत्रगूढराषियकहिय,देषिकाजसुषदैन ॥ ७ ॥

टीका—मनकरकें चिंतित कार्य वाणिसें प्रकाश नहि करना. मंत्रको प्रच्छन्न (छिपायके) रखना कोइ कार्य उत्पन्न भये प्रकाश करना ॥ ७ ॥

सर्पःक्रूरःखलःक्रूरःसर्प्पात्क्रूरतर खलः ॥ मं
त्रौषधिवशःसर्प्पःखलःकेनोपशाम्यति ॥८॥

दोहा—सरपक्रूरषलक्रूरतोउ, सरपहुतैंषलक्रूर ।
मंत्रौषधवसहोतअहि, षलवसहोतनमूर ॥ ८॥

टीका—सर्प क्रूर है. और खलपुरुषभि क्रूरहै तथापि खल पुरुष तो सर्पसेंभि अधिकतर क्रूर है क्योंकि सर्प है वो तो मंत्रके तथा औषधीके वश है अरु खलपुरुषका उपशामक कुछभी नहि ॥ ८ ॥

मूर्खश्चपरिहर्त्तव्यःप्रत्यक्षोद्विपदःपशुः ॥ अ
दृष्टःकंटकोयद्वद्वाक्यशल्येनविद्ध्यति ॥ ९ ॥

दोहा—पेषिमूढजनपरिहारिय, प्रगटद्विपदपशुतुल्य ।
विनदेषतकंटकजथा, वेधतवैनहिशल्य ॥ ९ ॥

टीका—जो प्रत्यक्ष दोय पगका पशु ऐसे मुर्खकों अवश्य त्याग देना क्योंकि विनदेपे कंटककी तरह वो मुर्ख बचन-रूप शल्यसें विंधता है ॥ ९ ॥

T

खलानांकंटकानांचद्विविधैवप्रतिक्रिया ॥
उपानन्मुखभंगोवादूरतोवाविसर्जनं ॥ १० ॥
दोहा—कंटककैअरुषलनकै, देषियद्वैउपचार ।
मुखभांजियपदत्रांनतै, कैदूरहिंदैडार ॥ १० ॥

टीका—खल अरु कंटकको दोय प्रकारके पालन हैं उपानतसें मुख भंग अथवा दूरसें त्याग करना ॥ १० ॥

एतदर्थंकुलीनानांनृपाःकुर्वंतिसंग्रहं ॥ आदि
मध्यावसानेषुनतेयास्यंतिविक्रियां ॥११॥
दोहा—एहिकारनकुलवंतकौ, संग्रहनृपतिकरंत ।
आदिमध्यअरुअंतमै, तेकबहूनतजंत ॥ ११ ॥

टीका—इसवास्ते कुलीन पुरुषोंका राजालोक संग्रह करते हैं क्योंकि वो कुलीन पुरुष आदिमें मध्यमें अंतमें विकारकों प्राप्त नहि होते हैं ॥ ११॥

प्रलयेभिन्नमर्यादाभवंतिकिलसागराः ॥
मर्यादाभेदमिच्छंतिप्रलयेपिनसाधवः ॥१२॥
दोहा—सागरहूसबप्रलयमैं, दैमरजादनिवारि ।
तबहुनछाँडतसाधुजन, निजमरयादनिहारि १२

टीका—समुद्र है वोभी प्रलयकालमें मर्यादाको त्याग देता हैं परंतु साधुपुरुष हैं वेतो. प्रलयकालमेंभि मर्यादाको नहि छोडते ॥ १२ ॥

शैलेशैलेनमाणिक्यंमौक्तिकंनगजेगजे ॥
साधवोनहिसर्वत्रचंदनंनवनेवने ॥ १३ ॥
दोहा—गिरिप्रतिनहिमानकगनिय,मोतिनप्रतिगजमांहि
सभाहिठौरनहिसाधुजन, बनवनचंदननांहि १३

टीका–शैल शैलपर माणिक्य नाहि. सब हस्तिनमें मोती नाहि सबजगे साधु नहिं. और सबवनमें चंदन नहि ॥ १३ ॥

पुत्रास्तुविविधैःशिल्पैः नियोज्याः सततंबुधैः॥नीतिज्ञाबुद्धिसंपन्नाभवंतिखलुपूजिताः १४

दोहा–चातुरतासुतकूंसुपितु, सिषवतवारहिंवार ।
नीतिवंतबुद्धिवंतकै, पूजतसबसंसार ॥ १६ ॥

टीका–चतुरपुरुष आपके पुत्रनको नानाप्रकारकी चातुर्यता करके युक्त करदेत हैं किसवास्ते किनीतिकों जाणनेवाले. बुद्धिवान् पुरुष सब जगतमें पूजित होते हैं ॥ १४ ॥

माताशत्रुःपितावैरीवालोयेननपाठितः ॥ न शोभतेसभामध्येंहंसमध्येबकोयथा ॥ १५ ॥

दोहा–तातमातअरितुल्यते, सुतनपढावतनीच ।
सभामध्यसोभतनसो,जिमबकहंसनबीच ॥१४॥

टीका–जिस मातापितानें पुत्रको नहि पढाया तो वो माता तो शत्रु है. अरु वो पिता वैरीहै क्योंकि वो मूर्ख पुत्र सभाके बीचमें नहि शोभता जैसे हंसके बीचमें बगुला नहि शोभ तैसें ॥ १५ ॥

श्लोकेनचतदर्द्धेनपादेनैकाक्षरेणवा ॥ अवंध्यंदिवसंकुर्याद्यदीच्छेच्छुभमात्मनः ॥ १६ ॥

दोहा–सीषतश्लोकहुअरधकै, पादहुअच्छरकोय ।
वृथागमावतदिवसनां,सुभचाहतनिजसोय ॥१६॥

टीका जो आपका शुभ विचारेतो १ श्लोक अथवा आधा श्लोक अथवा श्लोकका १ पाद अथवा १ अक्षरभी नित्य पढना परंतु बिगर पढे खाली दिवस व्यती नहि करना ॥१६॥

लालनेबहवोदोषास्ताडनेवहवोगुणाः ॥ त
स्मात्पुत्रंचशिष्यंचताडयेनैवलालयेत् ॥ १७ ॥

दोहा—सुतलालनमैंदोषबहु, गुनबहुताडनमांहि ।
तेहितैंसुतअरुशिषनकूं, ताडियैलालियैनांहि १७

टीका—पुत्रादिकनके लडाणेमें बहुतसे अवगुन है. और ताडनादिनमें बहुतसे गुन हैं तिसकारणसे पुत्रको और शिष्यखो ताडना करना परंतु लालना नहि करना ॥ १७ ॥

इतिश्रीवृद्धचाणक्येराजनीतिशास्त्रेद्वितीयोऽध्यायः

लालयेत्पंचवर्षाणिदशवर्षाणीताडयेत् ॥
प्राप्तेषोडशकेवर्षेपुत्रंमित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥

दोहा—पंचवर्षलूंलालियै, दशलहिताडनजांन ।
प्रापतषोडशवरससुत, मांनियैमीतसमांन ॥ १ ॥

टीका—प्रथम ५ वर्षतक पुत्रको लालना देना पीछे १० वर्षतक ताडना देना अरु १६ मा वर्ष प्राप्त भये पुत्रको मित्रकी तरे विचारना ॥ १ ॥

रूपयौवनसंपन्नाविशालकुलसंभवाः ॥ वि
द्याहीनानशोभंतेनिर्गंधाइवकिंशुकाः ॥ २ ॥

दोहा—संयुतजोवनरूपतैं; कहियतवडेकुलीन ।
विद्याविनसोभैगजिम, पुहुपगंधतैहीन ॥ २ ॥

टीका—रूप अरुप यौवन करके संपन्न और मोटे कुलमें उत्पन्न भये परंतु विद्याहीन हैं वो नहिशोभते जैसे सुगंधि विगरके किंशूकके वृक्ष नहि शोभे तैसे ॥ २ ॥

T

परान्नंपरवस्त्रंचपरशय्यांपरस्त्रियम् ॥ परवे
श्मनिवासंचदूरतःपरिवर्जयेत् ॥ ३ ॥

दोहा–परसज्यापरअसनपर, वसनपराईनारि ।
परघरकरनप्रवेसयह, दीजैदुरिनिवारि ॥ ३ ॥

टीका–परान्न परवस्त्र. परशय्या. परस्त्री पराये मकानमें रहना. यह ५ दुरसेहि त्याग देना ॥ ३ ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणांयस्यैकोपिनविद्यते ॥
तस्यजन्ममनुष्यस्यमरणायैवकेवलं ॥ ४ ॥

दोहा–धरमादिकचहूंवरगमै, जोहियएकनधार ।
जगतजनमितेहिनरनकै, मरिबैहोतअँवार॥४॥

टीका–धर्म. अर्थ. काम अरु मोक्ष इन ४ मेसें जिसके एकभि सिद्ध नहि भया. तिन मनुष्यका जन्म केवल मरणेके लियेही है ॥ ४ ॥

नविनापरवादेनरमतेदुर्जनोजनः ॥ काकः
सर्वरसान्भुक्त्वाविनामेध्यंनतृप्यति ॥५॥

दोहा–दुष्टनहीपलएकसुख, विनकीन्हेपरदोष ।
काकसरबरसामिलततोंउ,विनपुरीषनहिपोष॥५॥

टीका–परानिंदा किया बिगर दुर्जन मनुष्य सुखी नहि होता, जैसें काक अनेक प्रकारके भोजन करकेंभि अपवित्र वस्तुखाये विगर तृप्ति नहि होता ॥ ५ ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणांयस्यैकोपिनविद्यते ॥
अजागलस्तनस्येवतस्यजन्मनिरर्थकम् ॥६॥

दोहा–धरमनअरथनकामजेहि मोछनसबसुषषांन ।
अजागलस्तनकेजथा, जनमवृथातिहिजांन॥६॥

टीका—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारोंमेंसे जिनके एक भि सिद्ध नहि भया तिनका जन्म अजाके गलस्तनकी पर निरर्थक है ॥ ६ ॥

विद्याप्रशंसितालोकेनशरीराणिदेहिनाम् ॥
एकःसाधुःसुशब्दश्चकृष्णोपिश्लाघ्यतेपिकः॥७॥

दोहा—विद्याहीतैंलहतजस, नरसरीरतैंनांहि ।
पिकस्यामहुसुभसबदतैं, पूजियैसबजगमांहि ७॥

टीका—लोकमें मनुष्योंकी विद्यासे प्रशंसा होती है. परंतु शरीरसें नहि होती जैसे कोकिल शरीरतें श्याम है तथापि अच्छे मधुरशब्द बोलनेसे प्रशंसनीय होताहै ॥ ७ ॥

मातासत्यंपिताज्ञानंधर्मोभ्रातादयास्नुषा ॥
विद्यापत्नीस्वसाक्षांतिर्जीवानांहितबांधवाः८॥

दोहा—मातसत्यपितुग्यांनध्रम,भ्रातदयासुततीय ।
छमाबहनिविद्याघरनी, एबंधवहैजीय ॥ ८ ॥

टीका—ये मनुष्योंके हितकारी बंधुहै सत्य है सो तो माता है ज्ञान पिता है धर्मभाइ है. दयापुत्रवधुहै विद्या स्त्रीहै क्षमा भगिनीहै ॥ ८ ॥

अभ्रछायातृणादग्निर्नीचसेवास्थलेजलं ॥
वेश्यारागःकुमित्रंचषडेतेबुद्बुदोपमाः ॥ ९ ॥

दोहा—घनछायातृनआगअरु,नीचसेवथलनीर ।
गनिकानेहकुमितषट्, बुदबुदजथाअधीर ॥ ९॥

टीका—बादलकी छाया,तृणकी अग्नि, नीचकी सेवा रेती- पर जल वेश्याकी प्रीति और कुमित्रये छह बुद्बुदके तुल्यहैं ९

T

जीवोपिराजानगरंशरीरंमंत्रीमनोलोकइवें
द्रियाणि ॥ मनोविनाशेसकलंविनष्टंयथावि
कर्णंकटकंकुरूणाम् ॥ १० ॥

दोहा—जियनृपनगरसरीरमन, मंत्रीइंद्रियलोक ।
मननासतसबनसतजिम, विकरनकुरुदलसोक

टीका—जीव राजा है, शरीर नगर है, मन मंत्री है, इंद्रियां लोक हैं मनके नाश भये सबका नाश होता है, जैसें कर्णके नाश भए कौरवके कटकका नाश भया तैसे ॥१०॥

इतिश्रीवृद्धचाणक्येराजनीतिशास्त्रेतृतीयोऽध्यायः

धर्ममर्थचकामंचयथाशक्तिप्रसादयेत् ॥ ब्रा
ह्मेमुहुर्त्तेचोत्थायचिंतयेदात्मनोहितं ॥ १ ॥

दोहा—धरमअरथअरुकामतिहुं; जथाशक्तिउरधार ।
ब्राह्ममुहूरतऊठिनित, हितआतमाहिविचार॥१॥

टीका—धर्म अर्थ अरु काम इनको यथाशक्ति धारन करना और पिछली च्यार घटिका रात रहै तब आपका हित चिंतवन करना ॥ १ ॥

कःकालःकानिमित्राणिकोदेशः कौव्ययाग
मौ ॥ कश्चाहंकाचमेशक्तिरितिचिंत्यंमुहुर्मुहुः२

दोहा—कालमित्रअरुदेशकहा, कहालाभकहाहांन ।
कोमैंकैसीशक्तिइम, बारबारहियठांन ॥ २ ॥

टीका—काल कहा, मित्रकौन, देश कहा, और पैदास अरु खरच कहा, मैं कौन, मेरी शक्ति कैसी, ऐसा वारंवार चिंतवन करना ॥ २ ॥

T

जनकश्चोपनेताचयस्तुविद्यांप्रयच्छति॥ अ
न्नदाताभयत्रातापंचैतेपितरःस्मृताः ॥ ३ ॥

दोहा–पितामंत्रदायकअपर, विद्याप्रदविख्यात ।
दाताभयत्रातप्रगट, पंचहिपिताकहात ॥ ३ ॥

टीका–जन्म देनेवाला १ यज्ञोपवीत देनेवाला, २ विद्या पढानेवाला, ३ अन्नका देनेवाला, ४ भयसें रक्षा करनेवाला ५ यह पांच पिता जगतमें कहे जाते हैं ॥ ३ ॥

राजपत्नीगुरोःपत्नीमित्रपत्नीतथैवच ॥ प
त्नीमातास्वमाताचपंचैतेमातरःस्मृतः ॥ ४ ॥

दोहा–राजापतनीगुरुपतनि, पतनीमित्रवषांन ।
तियमातानिजमातयह, पंचहिमातसमाँन ॥ ४ ॥

टीका–राजाकी स्त्री,गरुकी स्त्री मित्रकी स्त्री और पत्नीकी माता अरु आपकी माता यह पांच जगतमें माता कही जातीहैं

गुरुरग्निर्द्विजातीनांवर्णानांब्राह्मणोगुरुः॥प
तिरेकोगुरःस्त्रीणांसर्वस्याभ्यागतोगुरु ॥५॥

दोहा–अग्नीगुरुकुलद्विजनकै, बिप्रवरनगुरुहोय ।
पतिगुरुजानौतियनकौ, अतिथिसर्वगुरुसोय ५॥

टीका–ब्राह्मणोंका अग्नि गुरु हैं और ४ वर्णका ब्राह्मण गुरु है और स्त्रियोंका एक पति है वो गुरु है और अभ्यागत सबनके गुरु हैं ॥ ५ ॥

यथाचतुर्भिः कनकंपरीक्ष्यतेनिघर्षणैश्छेदन
तापताडनैः ॥ तथाचतुर्भिःपुरुषंपरीक्षयेत्
श्रुतेनशीलेनकुलेनकर्मणा ॥ ६ ॥

दोहा—घसनछेदतपदंडतैं, पारषकनककहात ।
श्रुतकुलसीलसुकर्मतै, तैसैंइनरपरषात ॥ ६ ॥

टीका—जैसें ४ प्रकारसें सुवर्णकी परीक्षा होती है. कसोटीपर घसनेसें, और छेदन करनेसें अग्नीपर तपानेसें, कूटनेसें तैसे ४ प्रकार सें पुरुषकी परीक्षा शास्त्रके अभ्यासतें शीलसें, कुलसें, कर्मसें होती है ॥ ६ ॥

पार्थिवस्यतुवक्ष्यामिभृत्यानांगुणलक्षणं ॥
येनसंवर्द्धतेराज्यंलक्ष्मीःसद्यशएवच ॥ ७ ॥

दोहा—अबकहुंभूपतिभृतनके, गुनलच्छनजिमहोय ।
जेहितैंराजरुराजश्री, सुजसबढैजगसोय ॥ ७ ॥

टीका—अब राजोंके नौकरोंका गुण और लक्षण वर्णन करूंगा जिस्मै राज्य और लक्ष्मी और अच्छे यशकी वृद्धि होवे ॥ ७ ॥

वेदवेदांगतत्वज्ञोजपहोमपरायणः ॥ आशी
र्वादवचोयुक्तएषराजपुरोहितः ॥ ८ ॥

दोहा—ग्यानवेदवेदांगकौ, जपअरुहोमनिधांन ।
बोलतआसिषवचनसत, राजपुरोहितजांन ॥८॥

टीका—वेद और वेदांतके तत्वका वेत्ता अरु जप होम करणेमें तत्पर और आशिरवादरूप वचनकरकें युक्त यह राजाके पुरोहितका लक्षण है ॥ ८ ॥

प्रवीणःप्रेषणेदक्षःपरचित्तोपलक्षकः ॥ स्फुट
वाक्यस्तथाप्राज्ञएषदूतोविधीयते ॥ ९ ॥

दोहा—पठएकारजमाँहिपटु, परचितजांनप्रवीन ।
परगटबोलतवचनवर, दूतधरमकहिदीन ॥ ९ ॥

T

टीका–सब काम काज करणेमें तत्पर और किसीकेपास भेजणेमें चतुर और परके चित्तकी वार्ताकों जाणनेवाला और आप प्रगट वचन बोलै ऐसे बुद्धिमान पुरुष राजाके दूतकेवास्ते हैं ॥ ९ ॥

पितृपैतामहेदक्षःशास्त्रज्ञोमिष्टपाचकः ॥
सत्यवक्ताचभक्तश्चसूपकारःसउच्यते ॥ १० ॥

दोहा–चतुरपिताकीचालमैं, भक्तपचावतमिष्ट ।
सतवक्ताशास्त्रज्ञशुचि, सुपकारसोइइष्ट ॥ १० ॥

टीका–पिता पितामहकी परंपरामें चलनेवाला चतुर और शास्त्रको जाणनेवाला और मिष्टवस्तुका पाचक और सत्य बोले अरु स्वामीकी सेवामें तत्पर रहै यह (सूपकार) रसोईदारके लक्षण हैं ॥ १० ॥

आयुर्वेदेकृताभ्यासःसुवेषप्रियदर्शनः ॥
उक्तिहेतुसमायुक्तएषवैद्योविधीयते ॥ ११ ॥

दोहा–आयूवेदअभ्यासजेहि, सुभगवेषशुचिदेह ।
उक्तिहेतुसमयुक्तिअति, आहिवैद्यजनएह ॥ ११ ॥

टीका–आयुर्वेदशास्त्रमें किया है अभ्यास जिसने और सुंदर है वस्त्रादिक वेष और देखते सबको प्रिय लगे और हेतु युक्ति सहित होय उसको वैद्य कहना ॥ ११ ॥

मेधावीवाक्पटुःप्राज्ञःसर्वशास्त्रविशारदः ॥
सर्वस्यहिसमोलोकेएषसाधुःसुलेखकः ॥ १२ ॥

दोहा–मेधावीपटुवचनमैं, प्राज्ञशास्त्रवितजोय ।
सबहूनतैंसमभावचित, सुघरसुलेषकसोय ॥ १२ ॥

टीका—बुद्धिवान और वाक्चतुर, सब शास्त्रका वेत्ता पंडित और लोकमें सबनके समान ऐंसा होय वो राजाओंका अच्छा लेखक ॥ १२ ॥

त्यजेत्स्वामिनमत्युग्रमत्युग्रात्कृपणंत्यजेत्
कृपणादविशेषज्ञंतस्माच्चकृतनाशनं ॥ १३ ॥

दोहा—तजहुस्वामिअतिउग्रकौं, उग्रतैंकृपनजुजाहि ।
कृपनहुतैंअतिअज्ञकूं, तेहितैंकृतघनिताहि १३

टीका—अतिउग्र स्वामि होय तो उसका त्याग करना, उस अतिउग्रसें कृपणका त्याग करना, कृपणसें अज्ञानीका त्याग करना तिनसेंभि न्यून कृतघ्नी है तिनका त्याग करना ॥ १३ ॥

अलसंमुखरंस्तब्धंक्रूरंव्यसनिनंशठं ॥
असंतुष्टमभक्तंचत्यजेद्भृत्यान्नराधिपः ॥१४॥

दोहा—धीठक्रूरविसनीरुसठ, आलसवंतलवार ।
अतिलोभीरुअभक्तचर, नृपतेहिदूरिनिवार १४

टीका—आलसु और वाचाल और स्तब्ध दुष्ट व्यसनसहित, मूर्ख और अभक्त, ऐसे भृत्यहोय तिनको राजा त्याग करै १४

उपदेशोहिमूर्खाणांप्रकोपायनशांतये ॥पयः
पानंभुजंगानांकेवलंविषवर्द्धनं ॥ १५ ॥

दोहा—मूढनकूंउपदेशतैं, कोपनशांतिलगार ।
जिमपयपांनभुजंगकै, विषतनवढतअपार १५

टीका—मूर्खनको उपदेश देनेसें कोपकी वृद्धि होती है परंतु शांति नहि होती है जैसें सर्पको दुग्धपान करानेसें

केवल विषकी वृद्धि होती है परंतु अमृतकी वृद्धि नहि होती तैसे ॥ १५ ॥

इतिश्रीवृद्धचाणक्येराजनीतिशास्त्रेचतुर्थोऽध्याय ४

वरंनराज्यंनकुराजराज्यंवरंनामित्रंनकुमित्रमि
त्रं ॥ वरंनदारानकुदारदारावरंनशिष्योनकु
शिष्याशिष्यः ॥ १ ॥

दोहा—भलौअराजकुराजतैं, कुमिंतहुभलौआमिंत ।
भलौअदारकुदारतैं, कुसिषहुअसिषकहंत ॥१ ॥

टीका—कुत्सित राजाके राज्यसें नहि राज होना अच्छा और दुष्ट मित्रकी मित्राइसें मित्र नहि रखना अच्छा, और स्त्री नहि वो अच्छा परंतु कुभार्या अच्छी नहि और शिष्य नहि वो अच्छा, परंतु कुशिष्य अच्छा नहि

कुराजराज्येनकुतःप्रजासुखंकुमित्रमित्रेनकु
तोस्तिनिर्वृतिः ॥ कुदारदारैश्चकुतोगृहेरतिः
कुशिष्याशिष्येणयतःकुतोयशः ॥ २ ॥

दोहा—सुषकहांप्रजाकुराजतैं, मित्रकुमित्रनश्रेय ।
कहँकुदारतैंगृहसुष, कहँकुशिष्यजसदेय ॥२ ॥

टीका—दुष्ट राजाके राज्यकरकै क्या· प्रजाकों सुख और कुमित्रकी मित्राईसें कैसा आनंद. और कुभार्याकरके क्या घरमें सुख, और अविनयवान शिष्यकरके गुरुको यश कहां ॥ २ ॥

सिंहादेकंबकादेकंशिक्षेचत्वारिकुकुटात् ॥
वायसात्पंचशिक्षेतषट्श्वनस्त्रीणिरासभात् ॥३॥

दोहा–इकइकसिंहरुबकनतै, अरुनचूरतैंचारि ।
काकपंचषट्स्वांनतै, गरदभगुनतिहुंधारि ॥ ३ ॥

टीका--सिंह अरु बकसे एकेक गुन सीखना, और कुर्कुटसे ४ गुन सीखना और कागडेसें ५ और श्वानसें ६ और रासभसें ३ गुन सीखना ॥ ३ ॥

प्रभूतकार्यमत्यंतंयोनरःकर्त्तुमिछति ॥ सर्वा
रंभेणतत्कुर्यात्सिंहादेकंप्रकीर्तितं ॥ ४ ॥

दोहा–अतिउन्नतकारजकछू, कियचाहतनरकोय ।
करैअनतआरंभतै, गहतसिंहगुनसोय ॥ ४ ॥

टीका–जो कोई मनुष्य अत्यंत मोटा काम करनेकी इच्छा करे तो अनेक प्रकारसें हिंमत रखकें वो काम करना, यह १ गुणसिंहका है अर्थात् सिंह जिसवखत कोई जीवको मारने जाता है तब आपका पराक्रम करना शेष नहिरखता ४॥

इंद्रियाणितुसंयम्यबकवत्पंडितोजनः ॥ देश
कालवलंज्ञात्वासर्वकार्याणिसाधयेत् ॥ ५ ॥

दोहा–देशकालबलजांनिकै, गहिइंद्रियकौंग्रांम ।
बकजैसैपंडितपुरुष, कारजकरहितँमांम ॥ ५ ॥

टीका–देश कालके बलको जानके पंडितजन बगुलेकी माफक इंद्रियनको रोंकके सब कामको सिद्ध करै ॥ ५ ॥

प्राग्रुत्थानंचयुद्धंचसंविभागंचबंधुषु ॥ स्त्रि
यमाक्रम्यभुंजीतशिक्षेच्चत्वारिकुक्कुटात् ॥६॥

दोहा–प्रथमउठैजुधमैजुरै, बंधुविभागहिदेत ।
तियसंजुतभोजनकरै, कुक्कुटगुनचहुलेत ॥ ६ ॥

T

टीका—सबनसें प्रथम ऊठना, युद्ध करना, बंधुनमें. वस्तुका, विभागकरना, और स्त्रीसहित भोजन करना, यह ४ वार्त्ता कुर्कुटके पास सीखना ॥ ६ ॥

गूढंचमैथुनंधार्यंकालेचालयसंग्रहं ॥
अप्रमादमविश्वासंपंचशिक्षेच्चवायसात् ॥७॥

दोहा—अधिकधीठअरुगूढरति, समयसुआलयसंच ।
नहिविश्वासप्रमादजेहि, गहैवायसगुनपंच ॥७॥

टीका—मैथुन गुप्तरीतसौं करना, धिठाइपना, समय आये स्थान बनाना, प्रमाद नहि रखना, किसीका विश्वास नहि करना, ये ५ गुण कागलेके पास सीखना ॥ ७ ॥

बव्हाशीचाल्पसंतुष्टःसुनिद्रःशीघ्रचेतनः ॥
स्वामिभक्तश्चशूरश्च षडेतेकुक्कुराद्गुणाः ॥८॥

दोहा—बहुभुक्थोरेहुतोषअति, सोवहिंशीघ्रजगात ।
स्वामिभक्तबडवीरता, षट्गुनस्वानगहात ॥ ८ ॥

टीका—भोजन अधिक करे, थोडेमें संतोष, सुखसें निद्रा करे, शीघ्र जागृत होय. स्वामीभक्त, अरु शूरवीर, ये६ गुण श्वानके पास सीखना ॥ ८ ॥

अश्रांतंयोवहेद्भारंशीतोष्णंनचविंदति ॥ सु
संतुष्टःसदानित्यंत्रीणिशिक्षेच्चरासभात् ॥९॥

दोहा—भारवहतथाकतनहीं, सीतउष्णसमजाहि ।
हियअधिकसंतोषगुन, गरदभतीनगहाहि ॥९॥

टीका—श्रमरहित भारकूं वहे. और शीत उष्णको नहि विचारे, संतोषकरकें सदा सुख रहै, ये ३गुण रासभके पास सीखना ॥ ९ ॥

T

शिक्षणांविंशतिंचैतामाचरिष्यतियोनरः ॥
सजित्वातिरिपून्सर्वानजेयश्चभविष्यति १०॥

दोहा—बिंसतिसीषविचारियह, जोनरउरधारंत ।
सोसबअरिजीततअवस, जयजसजगतलहंत १०

टीका—यह पूर्व कहे ऐसे सिक्षाके वीसगुणको कोई मनुष्य आचरण करेंगें वो सब शत्रूनको जीत लेगा, अरु आप सवसे अजेय होगा ॥ १० ॥

अर्थनाशंमनस्तापंगृहेदुश्चरितानिच ॥ वंच
नंचापमानंचमतिमान्नप्रकाशयेत् ॥ ११ ॥

दोहा—अरथनाशमनतापअरु, दुरचरित्रघरमांहे ।
वंचनताअपमाननिज, सुघरप्रकासतनांहि ११॥

टीका—धनका नाश, और मनकी चिंता, और घरके कोईभि खोटे चरित्र, और कोई आपको ठगलेवे तथा अपमान करे यह इतनी बातें बुद्धिवान पुरुष बाहिर प्रकाश न करै ॥ ११ ॥

धनधान्यप्रयोगेषुविद्यासंग्रहणेषुच ॥ आहा
रेऽव्यवहारेचत्यक्तलज्जः सुखीभवेत् ॥ १२ ॥

दोहा—संचतधनअरुधानकूं, विद्यासीषतवार ।
करतअहारब्यूहारकूं, लाजनकरियलगार॥१२॥

टीका—धन धान्यका संचय करनेकेसमें, विद्याभ्यास करनेकेसमें, भोजनसमें, द्रव्यके देनलेंनकेसमें, लज्जा त्याग करै वो सुखी होता है ॥ १२ ॥

संतोषामृततृप्तानांयत्सुखंशांतचेतसां ॥
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्चधावतां ॥१३॥

T

दोहा–त्रिपतसुधासंतोषचित, शांतलहतसुषसोय ।
इतउतदौरतलोभधन,कहँसोसुषतोहिहोय॥१३॥

टीका–संतोषरूप अमृतसें तृप्त ऐसे शांत चित्तवाले पुरुषोंको जो सुख है वो धनके लोभसें इधर उधर दौडे उस पुरुषको कहांसे होय ॥ १३ ॥

संतोषस्त्रिषुकर्तव्यःस्वदारेभोजनेधने ॥
त्रिषुचैवनकर्तव्योदानेचाध्ययनेतपे ॥ १४ ॥

दोहा–तीनठौरसंतोषधर, तियभोजनधनमांहि ।
दाननमैंअध्ययनमैं,तपमैंकीजियैनांहि ॥ १४॥

टीका–तीन ठोर संतोष रखना,आपकी स्त्रीमें, भोजनमें, और धनमें, अरु तीन जगे संतोष नहि रखना. दानमे, विद्याध्ययनमें अरु तपमें ॥ १४ ॥

पादाभ्यांनस्पृशेदग्निंनगुरुंनैवचद्विजं ॥ न
धेनुंनकुमारींचनशिशुंनचधीमतः ॥ १५ ॥

दोहा॰अनलविप्रगुरुधेनुपुनि, कन्याकुमारीदेषि ।
बालकअरुबुधिवंतकै. पगनलगावहुपेषि ॥१५॥

टीका–अग्नि, गुरु,ब्राह्मण, गौ कुमारीकन्या, छोटा बालक, अरु विद्यावान् इनको पाँवसे स्पर्श कभी नही करना१५

हस्तीहस्तसहस्रेणशतहस्तेनवाजिनः ॥ शृं
गिणोदशहस्तेनदेशत्यागेनदुर्जनः ॥ १६ ॥

दोहा॰हस्तीहाथहजारतज,सतहाथनतैंवाजि ।
शृंगसहिततेहिहातदस दुष्टदेशतजिभाजि १६॥

T

टीका–हस्तीसें हजार हाथ, अश्वसें सौ हाथ, और वृषभसें १० हाथ, अलग रहना, और दुर्जन रहै उस देशको त्याग करकें रहना ॥ १६ ॥

हस्तीचांकुशहस्तेनकशाहस्तेनवाजिनः ॥
शृंगीलकुटहस्तेनखड्गहस्तेनदुर्जनः ॥ १७ ॥

दोहा–हस्तीअंकुसतैंहानियै, ताजनपकरितुरंग ।
सृंगधरनकूंलकुटतैं, असितैंदुर्जनभंग ॥ १७ ॥

टीका–अंकुशतें हस्तीको दमन करना और चाबकसें अश्वको और वृषभको लकुटसें, और दुर्जनको खड्ग हातमें लेकर हनन करना ॥ १७ ॥

इतिश्रीवृद्धचाणक्येराजनीतिशास्त्रपंचमोऽध्यायः५

लुब्धमर्थेनगृह्णीयात्स्तब्धमंजलिकर्मणा ॥
मूर्खछंदानुवृत्याचयाथातथ्येनपंडितं ॥ १ ॥

दोहा–धनदेलोभीकरियवस, ढीठजोरिजुगहात ।
कहैसुकरिकैमूढकूं, विदुषजथारथवात ॥ १ ॥

टीका–लोभी पुरुषको धनकरकें वश करना, अभिमानीको हाथ जोडके वश करना, मूर्खके कहनेके अनुसार चलकरके वश करना, और पंडितको यथार्थपनसें वश करना १

अनुलोमेनबलिनंप्रातिलोमेनदुर्बलं ॥ समंतुल्यबलंशत्रुंविनयेनबलेनच ॥ २ ॥

दोहा–बलवंतहिअनुकूलरहि, प्रतिकूलहिबलहीन ।
अतिबलसमबलशत्रुको,विनयबलहिवसकीन २

टीका—अनुकूल चालकरकें बलवंतको वशकरना, प्रति. कूल चालकरकें दुर्बलको वश करना, अतिबलिकों विनय करके वश करना और तुल्यबल शत्रुको बलसें वश करना२

यस्ययस्याहियोभावस्तस्यतस्यहितंनरः ॥
अनुप्रविश्यमेधावीक्षिप्रमात्मवशंनयेत् ॥ ३ ॥

दोहा—अभिप्रायजेहिजेहिजिसौ, जैसोइहितकरिजाहि
हियप्रवेशहुयबुद्धिवंत;तुरतकरहिवसताहि॥३॥

टीका—जिस जिसको जो जो पदार्थ हितकारी अच्छा लगे तिस तिसको वोहि पदार्थ सिद्धकरकें बुद्धिवान पुरुष तत्काल आपके वश करै ॥ ३ ॥

नात्यंतसरलैर्भाव्यंगत्वापश्यचकानने ॥ स
रलास्तत्रछिद्यंतेकुब्जास्तिष्ठंतिपादपाः ॥ ४ ॥

दोहा—अतिहीसरलनहोइयै, देषहूजनवनमांहि ।
तरुसीधेछेदतातिनहिं, वांकेतरुबचजाँहि ॥ ४ ॥

टीका—अत्यंत सूधा सरल नहि होनो, कछु तजरखना, क्योंकि वनमें जाके देखो सीधे वृक्ष छेदेजाते हैं और ठेढवृक्ष स्थित रहते हैं उनके पास कोई नहि जाते हैं ॥ ४ ॥

यत्रोदकंतत्रवसंतिहंसास्तथैवशुष्कंपरिवर्ज
यंति ॥ पूर्णसरस्तत्पुनराश्रयंतिनहंसतुल्ये
ननरेणभाव्यं ॥ ५ ॥

दोहा—सजलसरोवरहंसवासि, सूकतउडिहैंसोउ ।
देषिसजलआवतबहूरि, हंससमांननहोउ ॥ ५ ॥

टीका—जिस सरोवरमें जल है वहां हंस रहते हैं, अरुशुष्क सरोवरको त्याग देते हैं, वोहि सरोवर फिर जलसें पूर्ण

होय तब फिर हंस आते हैं एसें हंस तुल्य मनुष्यने कभी नहि होना चाहिये ॥ ५ ॥

उपार्जितानामर्थानांत्यागएवहिलक्षणं ॥ तडागोदरसंस्थानांपरीवाहइवांभसां ॥ ६ ॥

दोहा–धनसंग्रहकौपेषियै, प्रगटदांनप्रतिपाल ।
जोमोरीजलजानकूं, तबनहिफूटतताल ॥ ६ ॥

टीका–संचयकिये हुवे धनका दान देना वोरक्षाहै, अर्थात् धनके खरचनेसे धनकी वृद्धिहोती है जैसे तलाव बावडी कूपके अंदर रहेहुवे जलकी रोज लेजानेसें वृद्धि होती है ६

यस्यार्थास्तस्यमित्राणि यस्यार्थास्तस्यबांधवाः ॥ यस्यार्थाःसपुमान्लोकेयस्यार्थाःसच जीवति ॥ ७ ॥

दोहा–जिनकैधनतेहिमितबहु, जेहिधनबंधुअनंत ।
धनसोइजगमैंपुरुषवर, धनसोइजनजीवंत ॥७॥

टीका–।जिनके घरमें धन है तिनके सब मित्रहैं, और जिनके धन है उनके सब बंधु हैं, और जिनके धन है वोहि लोकमें श्रेष्ठ पुरुष है, और जिनके धन है वोहि जगतमें जीवंता है ॥ ७ ॥

त्यजंतिमित्राणिधनैर्विहीनान्दाराश्चपुत्राश्चसुहृज्जनाश्च ॥ तमर्थवंतंपुनराश्रयंतिअर्थोहिलोकेपुरुषस्यबंधुः ॥ ८ ॥

दोहा–तजतमित्रधनहीनतेहि, तियसुतजिनहिनजांन
धनआवतआवतसबहि, बंधु न धनसमआँन।८।

T

टीका—धनहीन पुरुषनकों मित्र त्याग कर देते हैं, और स्त्रियां त्याग कर देतीहैं, और पुत्रभि त्याग करै, और परम मित्र होतेहै वोभि त्यागकर देते हैं अरु धनवान् पुरुषको ये मित्रादिक सब आयके मिलजाते हैं इसवास्ते धनही पुरुषको बंधुरूप हैं ॥ ८ ॥

नरस्यार्थविहीनस्यदुःखितस्याल्पमेधसः ॥
नश्यंतिप्रक्रियाःसर्वाग्रीष्मेकुसरितोयथा ॥ ९ ॥

दोहा—नरधनहीनविहीनमति, तेहिदुषहोततमांम ।
सुभकिरियानासतसबै, लघुसरिताजिमधांम॥९॥

टीका—धनहीन दुःखित अल्प बुद्धिवान् मनुष्यकी सब शुभक्रिया नाश होजातीहै, जैसें ग्रीष्मऋतुमें तुच्छ नदीयां सूखजाती हैं तैसें ॥ ९ ॥

विभवःपूज्यतेलोकेनशरीराणिदेहिनां॥ चां
डालोपिनरःश्रेष्ठोयस्यास्तिविपुलंधनं॥१०॥

दोहा—विभवपूजियतुजगतमैं, नहिसरीरकसिव ।
अनधनसंपतिअधिकजो, दीषतस्वपचहुदेव १०

टीका—जगतमें जीवोंके धनकी पूजाहै परंतु शरीरकि पूजा नहि जिसके धन बहुत है वोचांडालभि मनुष्यनमें श्रेष्ठ है१०

जिताधनवतादारावाक्प्रगल्भैःसभाजिता
जितासाहसिभिर्लक्ष्मीर्गोभिरभ्यागतोजितः ११

दोहा—तियजीतीधनवंतजन, सभावचनछलवंत ।
लक्ष्मीउद्योगीजिती, प्रियवचअतिथिजितंत ११

टीका–धनवंत पुरुषनें स्त्रीको जीत लइ, वचनकी चातुर्यताकरकें सभा जीति जाती है और उद्यमवंत पुरुषनें लक्ष्मीको जीत लइ और सत्य वचनसें अतिथि जीते जातेहैं

वल्मीकंमधुजालंचशुक्लपक्षस्यचंद्रमाः॥राजद्रव्यंचभक्ष्यंचस्तोकेस्तोकेनवर्द्धते ॥ १२ ॥

दोहा–वलमीकरुमधुजालससि, शुकलपच्छकौसोय ।
राजद्रव्यअरुभक्षययह, अलपअलपबहुहोय १२

टीका–उदेइ मधुमाक्षिकाका समूह और शुक्लपक्षका चंद्रमा राजाका द्रव्य,और भोजन थोडे थोडे करकें वधता है ॥१२॥

शनैरर्थाःशनैःपन्थाःशनैःपर्वतलंघनं ॥ शनैर्धर्मश्चकामश्चव्यायामश्चशनैःशनैः ॥ १३ ॥

दोहा–सनैअरथपंथहिसनै, सनैचढेगिरिघांम ।
सनैधरमअरुकामसोउ, सनैकारियैव्यायाम १३

टीका–शनैःशनैः अर्थसिद्ध होताहै और शनैःशनैः मार्गका चलना होताहै और शनैःशनैःपर्वतका उल्लंघन होताहै, ऐसे धर्म अर्थ काम व्यायामादिक सब शनैः शनैः सिद्ध होता है ॥ १३ ॥

अंजनस्यक्षयंदृष्ट्वावल्मीकस्यचसंचयं ॥ अवंध्यंदिवसंकुर्याद्दानाध्ययनकर्मभिः ॥ १४ ॥

दोहा–अंजनकौछयदेषिकै, वलमीकहिचयदेष ।
दानादिकशुभकरमगहु, वांझनकरियनिमेष १४

टीका–नित्य नेत्रमें अंजन करनेसे अंजनका क्षय होजाता है अरु शनैः शनैः उदेइकी वृद्धि होजातीहै उसको देख-

के दान विद्याध्ययन और शुभ कर्म इनसे दिवसको सफल करना ॥ १४ ॥

एतदेवहिपांडित्यनियमेवबहुज्ञता ॥ अयमे
वपरोलाभोयदल्पाद्भुरिरक्षणम् ॥ १५ ॥

दोहा—सोइपंडितजन जांनियै, सोइबहु जांनकहंत ।
परमलाभसोइपेषियै लघुतैभूरिलहंत ॥ १५ ॥

टीका—यहहि पांडित्यपणा, सोहि शास्त्रका जाणणा सोई परम लाभ हैं क्याहै कि अल्प-वस्तुसे बहुत वस्तुकी रक्षा करणी ॥ १५ ॥

त्यजदुर्जनसंसर्गंभजसाधुसमागमं ॥ कुरुपु
ण्यमहोरात्रंस्मरनित्यमनित्यतां ॥ १६ ॥

दोहा—तजदुरजनकौसंगभज, साधुसमागमनित्य ।
नरनिसिदिनबहुपुनकरहु, जानहुजगतअनित्य

टीका—दुर्जनकी संगत त्यागना और साधुकी संगत करना और रातदिवस शुभ काम करना और संसार अनित्यहैं ऐसा नित्य स्मरण करना ॥ १६

इतिश्रीवृद्धचाणक्येराजनीतिशास्त्रेषष्ठोऽध्यायः ६

मूर्खश्चैवतपस्वीचशूरश्चाप्यकृतव्रणः ॥ मद्य
पास्त्रीसतित्वंचराजन्नश्रद्दधाम्यहं ॥ १ ॥

दोहा—मूरषकूंतपसीकहत, वीरहीनव्रनदेह ।
मदपीवतकहियैसती, हमनहिमानाहिएक ॥ १ ॥

T

टीका—मूर्खको तपसी कहना और शस्त्रादिकसेंशरीरकेछेद नहि हुवा उनकौंसूर वीर कहना और मद्यपान करनेवाली स्त्रीको पतिव्रता कहना यहमैं नहि मानताहुं सब मिथ्या है

स्त्रीविनश्यतिरूपेणब्राह्मणोराजसेवया ॥
गावोदूरप्रचारेणहिरण्यंलाभलिप्सया ॥ २

दोहा—तियविनसैअतिरूपतैं, द्विजनृपसेवकराय ।
दूरचरतसुरभीनसै. लाभलोभधनजाय ६ २॥

टीका—अधिक रूपकरके स्त्री और राजाकी सेवाकरके ब्राह्मण, और दूर जानेसें गौ, और लोभसें धन इनका नाश होता है ॥ २ ॥

याचभार्याविरूपाक्षीकश्मलाकलहप्रिया ॥
वचनोत्तरवक्रीचसाजरानजराजरा ॥ ३ ॥

दोहा—विरूपाक्षिवनिताजिनही, पापकलहकीषांन ।
प्रतिउत्तरदासोइजरा, जराजरानाहिंजान ॥३॥

टीका—जो स्त्री विरूप नेत्रकी धरनेवारी, पापरूप कलह करण और पीछा उत्तर देनेवारी है तो वोही जरा है परंतु जरा अवस्था वो जरा नहि । ३ ॥

याचभार्याशुचिर्दक्षाभर्त्तारमनुगच्छति ॥
नित्यंमधुरवक्रीचसैवश्रीर्नेश्रियःश्रियः ॥ ४ ॥

दोहा—जोतियपावनचतुरअति, मांनतपतिसिरमोर ॥
मुखबानीबोलतमधुर, सोश्री श्रीमहिऔर ॥३॥

टीका—जो भार्या पवित्र चतुर भर्तारकी आज्ञामें चलनेवारी और नित्य मधुर वचन बोलनेवारी है तो वोही लक्ष्मी है परंतु और लक्ष्मी नहि ॥ ४ ॥

T

साभार्यायागृहेदक्षासाभार्यायाप्रियंवदा ॥
साभार्यायापतिप्राणासाभार्यायत्रनिर्वृतिः॥५॥
दोहा—जोभामिनिगृहकाजपटु, कहैप्रियवचनउदार ।
सोइवनितापातिप्रानसम, सोइसबसुषकीसार ५

टीका—जो घरके काम करनेमें चतुर, प्रिय अरु मधुर वचनको बोलनेवारी, पतिको प्राणतुल्य जाननेवारी, अरु जिसमें भर्त्तार आनंद प्राप्तहो ऐसी जगतमें स्त्री है वोही स्त्री ५

श्रोत्रियस्यचभार्यायापरवेश्माभिलाषिणी ॥
कुत्सितात्यक्तलज्जाचसाजरानाजराजरा ॥६॥
दोहा—बनिताव्हैजनविदुषकी, घरघरकरहिविहार ।
तनकलाजनहितुच्छसोइ, जराजराकहालार ६

टीका—पंडितकी स्त्री, लज्जा त्यागके निंदनीय परघरकी अभिलाषा रखनेवारी जो वोही जरा है परंतु जराअवस्था वो जरा नहीं ॥ ६ ॥

विदुषीधर्मतत्वज्ञा याभार्यापतितत्परा॥ स्व
ल्पकेनापिसंतुष्टासाश्रीरेवास्तिरूपिणी ॥ ७ ॥
दोहा—धरमतत्वग्याताविदुष, हितकारिनिपतिहोइ ।
अलपहुतैंसंतोषउर, श्रीसमवनितासोइ ।

टीका—विद्यावान, धर्मके तत्वको, जाणनेवारी, पतिकी सेवामें परायण, और यथालाभ संतोष रखनेवारी ऐसी जो स्त्री है वोही लक्ष्मी है ॥ ७ ॥

सद्भावेनैवतुष्यंतिदेवाःसत्पुरुषाद्विजाः ॥
इतरेखानपानाभ्यांवाक्प्रदानेनपंडिताः ॥८॥

T

दोहा—भावहुतैंमांनतभलौ, द्विजसतपुरुषरुदेव ।
अपरषांनअरुपानतैं, पिदुखवचनप्रियसेव ॥८॥

टीका—देवता, सत्पुरुष ब्राह्मण ये अच्छे भावकरकें प्रसन्न होते हैं, और दूसरे कितनेक खानपानसें प्रसन्न होते हैं और पंडित वचनसें प्रसन्न होते हैं ॥ ८ ॥

उत्तमंप्रणिपातेनशूरंभेदेनसंजयेत् ॥ नीच
मल्पप्रदानेनआत्मतुल्यंपराक्रमैः ॥ ९ ॥

दोहा—उत्तमजितहिप्रनामकरि, सूरहिभेदविचारि ।
नीचनकूंलघुदानतै, समतेहिपौरुषधारि ॥ ९ ॥

टीका—चतुर मनुष्यको चाहिये कि उत्तम मनुष्यको प्रणाम करके और सूरवीरकों भेद करकें तैसेही नीचको कछु थोडा बहुत देने करके, और आपके तुल्य बलवारेको पराक्रमसें जीत लेना ॥ ९ ॥

नाग्निस्तृप्यतिकाष्ठेननापगाभिर्महोदधिः ॥
नांतकःसर्वभूतैश्चनपुंभिर्वामलोचनाः ॥ १० ॥

दोहा—त्रिपतआगिनहिकाष्ठतैं, जलनिधिसारितातैंन ।
अंतकभूतनतैंतथा, जनतैंतियत्रिपतैन ॥ १० ॥

टीका—काष्ट करकें अग्नि तृप्ति नहि होती, और नदीयां करकें समुद्रपूरण नहि होता, और सब भूत प्राणिनसें काल तृप्त नहि होता, तैसेही पुरुषो करके स्त्रियां तृप्त नहिं होती ॥ १० ॥

दंतभंगोहिनागानांश्लाघ्योयद्धनूमहारणे ॥
सतांधनक्षयस्तद्वद्विद्वदारिद्यवारणे ॥ ११ ॥

दोहा—वारनकेजुधमैजुरे, रदभंजनसोइरूप ।
होतदरिद्रीदेतदत, नरतेहिसुजसअनूप ॥ ११॥

टीका—जैसे मोठे संग्रामके बीचमें हस्तियोंका दंत भंग होना वो अच्छा दीखता है, तैसें किसी सत्पुरुषने पंडित जनका दारिद्र मिटानेके लिये धनका खरच किया तो उसकीभी शोभा अधिक होजाती है ॥ ११ ॥

अपुत्रस्यगृहशून्यंदेशःशून्योविबांधवः ॥
मूर्खस्यहृदयंशून्यंसर्वशून्यंदारिद्रता ॥ १२ ॥

दोहा—विनसुतसूनौगेहविन, बंधुदेशदुषषांन ।
मुढहृदयसुनौसदा, सून्यदारिद्रीजांन ॥ १२॥

टीका—पुत्र बिगर घर शून्य. बांधवबिगर देशशून्य. मूर्खका हृदय शून्य. दरिद्रतासें सर्व जगत शून्य है ॥ १२ ॥

नालीकेरसमाकाराहृश्यंतेकेपिसज्जनाः ॥
बहवाबदराकाराबहिरेवमनोहराः ॥ १३ ॥

दोहा—केतेसज्जनजगतमैं, श्रीफलकेसमहोय ।
केतेबदरीफलनसे, सुंदरउपरसोय ॥ १३ ॥

टीका—कितनेक सज्जनपुरुष नालिकेरके आकार दीखते हैं (ऊपरसें कठिन, अंदर कोमल) और कितनेक सज्जन बोरके आकार होते है, ऊपरसें कोमल, अंदरसें कठिन १३

यस्यपुत्रोनविद्वांश्चनशूरोनचभक्तिमान् ॥
सांधकारंकुलंतस्यनष्टचंद्रेवशर्वरी ॥ १४ ॥

दोहा—जेहिसुतविदुषनवीरनहि, नहिपितुभक्तिप्रवीन।
तमसंजुतकुलताहिकौ, जिमरजनीससिहीन १४

टीका—जिसकापुत्र पंडित नहि, और शूर वीर नहिं, और भक्तिवान नहि जैसे चंद्रमा बिगर रात्री होय तैसें तिसका कुल अंधकार सहित है ॥ १४ ॥

शर्वरीदीपकश्चंद्रोरविर्दिवसदीपकः ॥ त्रैलो
क्यदीपकोधर्मःसुपुत्रःकुलदीपकः ॥१५॥

दोहा—विधुदीपकरजनीविषै, रविदिनदीपकहांहि ।
दीपधरमतिहुँलोकमैं, सुतसपूतकुलमाहि ।

टीका—रात्रीका दीपक चंद्रमा, और दिवसका दीपक सूर्य और तीन लोकका दीपक धर्म ऐसें कुलका दीपक सुपुत्र जानना

तृष्णाखनिरगाधेयंदुष्पूराकेनपूर्यते ॥ याम
हद्भिरपीक्षिप्तैःपूरणैरेवखन्यते ॥ १६ ॥

दोहा—पूरनकबहुनहोतहै, यहत्रिसनाकीषांन ।
बहुतजतनकरिपूरियै,ऊंडापहअधिकान ॥१६॥

टीका—यह तृष्णारूप खाड, बहुत गहेरी बडे मोटे मोटे पदार्थ अंदर रखनेंसेंभि यह तृष्णा पूरण नहि होतीहै॥१६॥

यज्जीवितेनजीवंतिमित्राणीष्टश्चबांधवाः ॥
सफलंजीवितंतस्यआत्मार्थेकोनजीवति ॥१७॥

दोहा—जिनकेजीवनतैंजियै, सजनबंधुसुखभौन ।
जिनहीकोजीवनसफल, निजहितजियैनकौन॥

टीका—जिसके जीवणेकरकें मित्र इष्ट बंधवादिक सब जीवते हैं, तिसका जीवना सफल है, और आत्माके अर्थ कौन नहि जीवैं है ॥ १७ ॥

इतिश्रीवृद्धचाणक्येराजनीतिशास्त्रेसप्तमोध्यायः ७

T

तद्भोजनंयद्विजभुक्तशेषमाप्राज्ञतायानकरोतिपापं ॥ तत्सौहृदंयत्क्रियतेपरोक्षेदंभैर्विनायःक्रियतेसधर्मः ॥ १ ॥

दोहा—पापरहितसोइप्राज्ञता, भोजनद्विजभुक्तसेस ।
त्रियपरोछकरमित्रसोइ, धरमसुदंभनलेस ॥१॥

टीका—ब्राह्मणोंके भोजन कीये पीछे शेष रहै तिसका भोजन करना वोहि भोजन है, और पाप न करै वोहि पंडिताई और परोक्ष करै वोहि मित्राई और कपट बिगर करना सोई धर्म ॥ १ ॥

कालेनरिपुणांसंधिःकालेमित्रेणविग्रहः ॥
कार्यकारणमाश्रित्यकालंक्षिपतिपंडितः ॥ २॥

दोहा—कालहुतैंआरिसंधिव्है, कालहुविग्रहमिंत ।
आश्रितकारनकाजव्है, पंडितकालक्षिपंत ॥२॥

टीका—कालकरकें शत्रुनसें संधि होय अरु कालकरकें मित्रनसें कलह होय, और कार्यकारणका आश्रय लेके पंडितजन कालक्षेप करते हैं ॥ २ ॥

कालःसृजतिभूतानिकालःसंहरतेप्रजाः ॥
कालःसुप्तेषुजागर्त्तिकालोहिदुरतिक्रमः ॥ ३ ॥

दोहा—कालखातसबजंतुकूं, कालहिसरबहरंत ।
सबसोवतकालहिजगै,काहियतकठिनकृतंत॥३॥

टीका—काल भूत प्राणिनको रचता है और कालही प्रजाका संहार करता है, काल सब जगतके सूते जागताहै, काल बहुत बलवान है ॥ ३ ॥

T

अग्निहोत्रफलावेदाःशीलवृत्तफलंश्रुतं॥रति
पुत्रफलादारादानभोगफलंधनं ॥ ४ ॥

दोहा—अग्निहोत्रफलवेदकौ, श्रुतफलशीलवषान ।
रतिसुतसुषफलातियनकौ, धनफलभोगरुदान ४

टीका—वेदका फल अग्नि होत्र, शास्त्र श्रवणका फल शील, व्रतधारण, और स्त्रीका फल रति, और पुत्रहोना, धनका फल दान देना अरु भोग भोगना ॥ ४ ॥

व्याधितस्यार्थहीनस्यदेशांतरगतस्यच ॥
नरस्यशोकतप्तस्यसुहृद्दर्शनमौषधं ॥ ५ ॥

दोहा—रोगिनकैधनहीनकै, गएविदेशमँडारि ।
सोकसहिततेहिनरनकै,मितदरससुखकारि ॥५॥

टीका—रोगीको निरधनको परदेश गया हो जिसके और शोकसंतप्त मनुष्यको मित्रका मिलाप होना येही औषध है ५

नित्यंस्नातासुगंधाचनित्यंचाप्रियवादिनी ॥
अल्पाशनाल्पभाषाचदेवतासानमानुषी ॥६॥

दोहा—नितहिसनानसुगंधितन, बोलतप्रिकमुषबान ।
अलपअसनवायकअलप,सोतियदेवसमांन ६

टीका—नित्य स्नान करै और सुगंधिसहित शरीर सदा प्रियवचन भाषण करै, और थोडो भोजन करै, अरु थोडो बोलै, वो देवता है मानुषी नही हैं ॥ ६ ॥

सततंमंगलैर्युक्तासततंधर्मवत्सला ॥
सततंचदयायुक्तासततंसत्यभाषिणी ॥ ७॥

T

दोहा—नितमंगलसंजुतलसै, परमधरमसुंप्रीत ।
दयासहितप्रियबोलिनी,वनितासुषद्विनीत ॥७॥

टीका—निरंतर मंगलकरके युक्त, और निरंतर धर्मपालक और निरंतर दयायुक्त, और सदाई सत्य भाषण करे, ऐसी स्त्री उत्तम कहिये ॥ ७ ॥

भर्तुश्चसततंभक्तासततंपथ्यभोजना ॥ अने
कक्रिययायुक्तासानारीसुखशेवधिः ॥ ८ ॥

दोहा—भक्तिकरतभरतारकी, भोजनपथ्यप्रमांन ।
चातुरक्रियाअनेकमै, तियसेवधिनिधिजांन॥८॥

टीका—भर्त्तारकी भक्तियुक्त और सदा प्रमाणसें जीमे और अनेक चतुराईसहित ऐसी स्त्री है वो सुखकी खांन है ८

हंसोनभातिबलिभोजनवृंदमध्येगोमायुमंड
लगतोनविभातिसिंहः ॥ जात्योनभातितु
रगःखरयूथमध्येविद्वान्नभातिपुरुषेषुनिरक्षरेषु ९

दोहा—हंसनसोंभतकाकमैं, स्यारनमैंमृगराज ।
वाजिनसोभतषरनमैं, विदुषनमूढसमाज ॥९॥

टीका—काकके समूहमें जैसें हंस नहिशोभता है, और सियालके समूहमें सिंह नहिशोभता, और जातिवंत अश्व खरके मध्यमें गयाहुवा नहिशोभता, तैसें पंडितपुरुष मूर्खनके बीचमें नहिशोभता है ॥ ९ ॥

वाजिवारणलोहानांकाष्ठपाषाणवाससां ॥
नारीपुरुषतोयानामंतरंमहदंतरं ॥ १० ॥

दोहा—गजतुरंगअरुलोहमैं, काठवसनपाषांन ।
नरमैनारीनीरमैं, अंतरअधिकवषाँन ॥ १० ॥

टीका—अश्व, हस्ति, लोह, काष्ट, पाषाण, वस्त्र, स्त्री, पुरुष, जल इनमें परस्पर बहुतसा अंतर है ॥ १० ॥

शून्यमश्वंगजंमत्तंबृषभंकाममोहितं ॥ अंतः पुरगतंभूपंदूरतःपरिवर्जयेत् ॥ ११ ॥

दोहा—अश्वअनारीमत्तगज, वृषभकामवसताहि ।
जातजनांनैभूपजब, जाइयैनिकटनजाहि॥११॥

टीका—एकला सूना फिरै ऐसे अश्वको और मदोन्मत्त हस्तिको काममोहित वृषभको तथा अंतःपुरमें गयेहुवे राजाको दूरसें त्याग करना ॥ ११ ॥

यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशास्त्रंतस्यकरोतिकिं॥ लोचनाभ्यांविहीनस्यदर्प्पणःकिंकरिष्यति १२

दोहा जिनकैउरप्रज्ञानही, कछुतेहिशास्त्रकरैन ।
जिनकैलोचननांहितेहि, दरपननिकटधरैन१२

टीका—जिनके स्वकीय बुद्धि नहि तिनके शास्त्र क्या करै जैसें नेत्रहीन अंधे पुरुषको दर्पण क्या करै ॥ १२॥

गुणेष्वक्रियतांरागोमाधनेष्वकदाचन ॥ विक्रीयंतेनघंटाभिर्गावःक्षीरविवर्जिताः १३ ॥

दोहा—गुनतैंकीजियप्रीतिअति,होहुनधनआधीन ।
घंटातैंसंजुतसुरभि, विकैनदूधाविहीन ॥ १३ ॥

टीका—गुणमें प्रीतिकरना परंतु धनमें प्रीति नहि करना. जैसें दूध वर्जित गौका केवल घंटा बांधनेसें विक्रय नहि होता है ॥ १३ ॥

पंडितेषुगुणाःसर्वेमूर्खेदोषास्तुकेवलं ॥ त
स्मान्मूर्खसहस्रेषुप्राज्ञएकोविशिष्यते ॥ १४ ॥

दोहा–पंडितमैंगुनहोतसब, मूरषदोषअनेक ।
तेहितैंमूढसहस्रमैं, पूजितपंडितएक ॥ १४ ॥

टीका–पंडितनमें सब गुन हैं, और मूर्खमें केवल अवगुनही हैं, तिसकारणसें हजार मूर्खनमेंभि एक पंडित अधिक है ॥ १४ ॥

दीर्घारातिभयत्राणंप्रीतिविश्रंभभाजनं ॥ के
नरत्नमिदंसृष्टंमित्रमित्यक्षरद्वयं ॥ १५ ॥

दोहा–अरिअनंतभयत्रानसम, भाजननेहनवीन ।
कवनरत्नसममित्रहै, अच्छररचेप्रवीन ॥ १५ ॥

टीका–प्राचीन कालके शत्रुनके भयको मिटानेवाला और प्रीति अरु विश्वासका भाजन जो मित्र ऐसे दो अक्षर रूप रत्नकों किसने उत्पन्न किया ॥ १५ ॥

प्रज्ञाढ्यास्तशरीरस्यकिंकरिष्यंतिशत्रवः ॥ ह
स्तोपधृतछत्रस्यवारिधाराइवारयः ॥ १६ ॥

दोहा–प्रज्ञाहोतशरीरतेंहि, दुरजनकहाकरंत ।
धरचोछत्रासिरपरातिनहि, कहामेघवरषंत ॥ १६ ॥

टीका–बुद्धिवान पुरुषके शत्रु क्या करे, जैसे छत्रसहित पुरुषकों मेघकी धारा क्या करै ॥ १६ ॥

संपदोन्नतवृत्तानांनापयातिविपत्तयः ॥ तृ
णोपचयसंपर्कान्मेदिनीदाहमश्नुते ॥ १७ ॥

दोहा—अतिसंपत्तिउन्नततिनहि, बिपताअंततपाय ।
जैसैंबहुत्रिनजोगतैं, जगमैअवनिजराय ॥१७॥

टीका—बहुतसी संपदासें वधेहुवे पुरुषनकों अंतमें आपदा आयके तपायमान करती है, जैसे बहुतसे तृण घासके वधनेके योगसें पृथ्वीको दाह होताहैं ॥ १७ ॥

राजाकुलवधूर्विप्रानियोगीमंत्रिणस्तथा ॥
स्थानभ्रष्टानशोभंतेदन्ताःकेशानखानराः १८

दोहा—राजाबधूकुलीनद्विज, चाकरमंत्रिमहंत ।
थानभ्रष्टसोभतनहीं, नरनषकेसरुदंत ॥ १८ ॥

टीका—राजा, कुलीन स्त्री विप्र सेवक, मंत्री, दंत, केश नख, और मनुष्य इतने स्थानभ्रष्ट हुवे नहिशोभते हैं ॥१८॥

पूगीफलानिपत्राणिराजहंसास्तुरंगमाः ॥
स्थानभ्रष्टाःसुशोभंतेसिंहाःसत्पुरुषागजाः १९

दोहा—राजहंसमृगराजगज, बाजिपूगीफलपांन ।
पंडितग्यातासतपुरुष, सोभतनांनिजथांन ॥ १९॥

टीका—सोपारी, नागरवेलके पत्र, राजहंस, अश्व, और सिंह, सत्पुरुष, अरु गज इतने सब स्थानसें भ्रष्टहुवे शोभते हैं अर्थात् अन्यत्र जानेसें इनकी किम्मत वध जाती है ॥१९॥

कहियतचांनकसंस्कृत, निरमलनीतिनिवास ।
भाषाकरिदोहाभनै, साधुभावनादास ॥ २० ॥

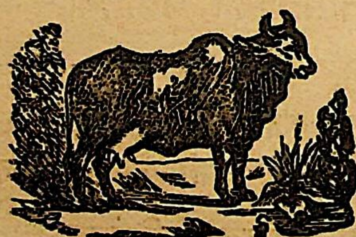
षोडसचानककेकाहियै, दोहाद्वैसततीस ।
सुभगस्वर्गसोपांनसम, अतिमुदप्रदअवनीस २१

अंकअयनग्रहइंदुकहि, संवतमाधवमास ।
पषउज्जलरविपंचमी, पूरनग्रंथप्रकाश ॥ २२ ॥

इतिश्रीभावनादासविरचितेभाषाटीका
वृद्धचाणक्येअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

॥ श्रीरामम् ॥

पंडित श्रीधर शिवलाल.
ज्ञानसागर छापखाना
(मुम्बई.)



T

सूचना.

—:०:—

हमारे ज्ञानसागर छापखानेमें छपेहुए अनेक तरहके ग्रंथ वैदिक, वेदांत, पुराण, धर्मशास्त्र, कर्मकांड, व्याकरण, न्याय, छंदोपनिषद, काव्य, अलंकार, नाटक, चंपू, कोश, वैद्यक, अरु भ-र्कीर्णग्रंथ, स्तोत्रादि, ख्याल, किस्सा, वगैरे अनेक तरहके भाषा अरु संस्कृतमें छापकर तैयार हैं. जिन महाशयोंकों चाहिये सो दाम भेजकर मंगालेवैं. पूर्व दामोंकी निश्चैकरणी होय तो सब पुस्तकोंका सूचीपत्र आधा आनेका टिकट भेजकर मंगालेवैं.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना:—

पंडित श्रीधर शिवलालजीके
ज्ञानसागर छापखाना
(मुंबई.)

T